Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रीः।

श्रीधर्मदाससूरिप्रणीतं

विदग्धमुखमण्डनकाच्यम्।

खोपज्ञच्याख्यासमलंकृतम् ।

डदं

पणशीकरोपाह्वविद्वद्वरलक्ष्मणशर्मतनुजनुषा वास्रदेवशर्मणा संशोधितम्।

(चतुर्थं संस्करणम् ।)

तच

मुम्बय्यां

पाण्डरङ्ग जावजी

इत्येतैः स्वीये निर्णयसागरास्यमुद्रणयन्त्रारूये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

शाके १८४८-सन १९२६.

मूल्यं ६ आणकाः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Publisher:—Pandurang Jawaji, Nirnaya-sagar Press.

Printer:—Ramchandra Yesu Shedge, 26-28, Kolbhat Lane, Bombay. PUBLISHER:-Pandurang Jawaji,

प्रास्ताविकम्।

अपातरमणीयेऽसिन्संसारे निजनिजप्राक्तनानुगुणजनिमतां जातिजराभयक्षेत्रपरंपरापारवर्येन दुःखोदकेंण कचन विद्यधमुखानामि मानुषप्राणिनां मुखसंपदमानन्दोद्रेकेण मण्डयतीति विद्यधमुखमण्डनं नाम खनामसदृश्चार्यनान्वर्थकं काव्यमिदम् । अस्य प्रणेता विद्वद्येसरः श्रुतपारदृश्चा श्रीमद्धमदाससूरिरासीत् । अयं कविवरः कदा कतमं महीमण्डलखण्डं निजजनुर्निवासाभ्यां मण्डयामास किवच काव्यानि प्रणिनायेति निणेतुं प्राचीनेतिहासकोशसाहाय्यमन्तरेण न पार्यामः । अनेन
तनुतरेऽप्यसिन्काव्ये हृद्यैः पर्यरतीव मनोहारिणी कविचातुरी प्रकटितेति सोलुण्डं
कथयामः । अनेन कवियत्रा प्रन्थोपोद्धाते चेत्थमभाणि—

'िकं मेऽथवा इतखलप्रणताविद्द स्थात्स स्वीकरोति सुजनो यदि मां गुणज्ञः ।
चन्द्रेण चारुचरितेन विकासितं यत्संकोचितं भवति िकं कुमुदं तमोभिः ॥
श्रीस्थै सतां तदनुभावगतावसादः
संस्रज्य गूढरचनां प्रतिभानुरूपम् ।
क्षिप्राववोधकरणक्षममीक्षितार्थ
वक्ष्ये विद्ग्धमुखमण्डनमप्रपञ्चम् ॥' इति ।

अलं प्रशस्तप्रशंसातिशयेन । अस्मिन्काव्ये प्रणेत्रा चतुरः परिच्छेदान्विधाय तत्र क्रमेण व्यस्तजातिः, मेद्यमेदकजातिः, चित्रजातिः, प्रहेलिकाजातिः, कर्तृगुप्तम्, क्रमंगुप्तम्, करणगुप्तम्, संप्रदानगुप्तम्, अपादानगुप्तम्, मात्राच्युतकम्, इसादि-विविधकाव्यप्रकारा यथायथं संद्भिताः सन्तीक्षेतत्काव्यं व्युत्पित्सूनां नैकशो भिन्नकाव्यरचनाप्रकारजातवोधनेनातीवोपकारकं स्पादिति निर्विवादम् । नहि कस्यचित्रकेवल-स्तुतिस्तोत्रवाग्जालेन प्रनथप्रागल्भ्यं चेतश्चमत्कृत्युत्पादकं भवति । तच प्रनथालोचनस-मकालमेव स्पादिलेतत्सकृत्संप्राह्यालोचनीयमिति काव्यरसिकानगुणज्ञान्विज्ञापयति—

पणशीकरोपाह्वविद्वद्वरलक्ष्मणशर्मसूनुः

वासुदेवशर्मा।

(BFF DAIL

अनुक्रमणिका।

~~~

| <b>प्रकरणनाम</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | पृष्ठे | प्रकरणनाम           |      |     | पृष्ठे |  |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|---------------------|------|-----|--------|--|
| प्रथमः परिच्छेदः।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |        |                     |      |     |        |  |
| मङ्गलाचरणम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | 9      | विषमजातिः           | •••  | ••• | 93     |  |
| ਤੁਹੀਟਾਰਲ                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |        | वृत्तनामजातिः       | •••  | ••• | 98     |  |
| उद्देशकम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | 9      | नामाख्यातजातिः      | •••  | ••• | 98     |  |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 3      | तार्क्यजातिः        | •••  | ••• | 90     |  |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 34     | सौत्रजातिः          | •••  | ••• | 96     |  |
| 2 2                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            | 34     | शाब्दीयजातिः        | •••  | ••• | 96     |  |
| द्विःसमस्तजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 3      | शास्त्रजजातिः       | •••  | ••• | 98     |  |
| व्यस्तसमस्तजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 8      | वर्णोत्तरजातिः      | •••  | ••• | 98     |  |
| The state of the s | 8      | वाक्योत्तरजातिः     | •••  | ••• | 98     |  |
| द्विर्व्यस्तकसमस्तजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        | 4      | तृतीयः परिच्छेदः ।  |      |     |        |  |
| द्विःसमस्तकव्यस्तजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | 4      | 0                   | CODY |     |        |  |
| एकालापकजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   | Ę      | चित्रजातिः          | •••  | ••• | २०     |  |
| शब्दार्थलिङ्गप्रभिनकम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | Ę      | श्लोकोत्तरजातिः     | •••  | ••• | 39     |  |
| शब्दार्थविभक्तिभिन्नम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | Ę      | खण्डोत्तरजातिः      | 200  | ••• | २१     |  |
| शब्दार्थवचनभित्रम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | v      | पादोत्तरजातिः       |      | ••• | 23     |  |
| शब्दार्थलिङ्गवचन्भिन्नम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       | v      | चक्रजातिः           | •••  | ••• | २३     |  |
| शब्दार्थविभक्तिवचनभिन्नम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | 6      | पद्मोत्तरजातिः      | •••  | ••• | २४     |  |
| शब्दार्थलिङ्गवचनभिन्नम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        | 6      | काकपदजातिः •••      | •••  | ••• | २४     |  |
| प्रकारान्तरेण प्रभिन्नकजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   | 4      | गोमूत्रनातिः        | •••  | ••• | २५     |  |
| द्वितीयः परिच्छेदः।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            |        | सर्वतोभद्रजातिः     | •••  | ••• | २५     |  |
| मेद्यमेदकजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | 9      | गतप्रवागतजातिः      | •••  |     | २६     |  |
| ओजिखजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | 9      | वर्धमानाक्षरजातिः   | •••  | ••• | २७     |  |
| रूपकसालंकारजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 90     | हीयमानाक्षरजातिः    | •••  | ••• | 26     |  |
| सकौतुकजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | 90     | शृङ्खलाजातिः        |      | *** | 38     |  |
| प्रश्नोत्तरसमजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | 99     | एकान्तरितश्रङ्खलाजा | तिः  | ••• | 30     |  |
| पृष्टप्रश्नजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 99     | नागपाशजातिः         |      |     | ३०     |  |
| भय्रोत्तरजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | 99     | संस्कृतप्राकृतजातिः | •••  |     | 39     |  |
| आद्योत्तरजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | 93     | संस्कृतापभ्रंशजातिः |      |     | 33     |  |
| मध्योत्तरजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | 93     | संस्कृतमागधिकम्     |      |     | 32     |  |
| अन्स्रोत्तरजातिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 93     | संस्कृतपैशाचिकम्    |      | -20 | 33     |  |
| क्षित्रणक्रिक्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | 93     | संस्कृतजीकिकम्      | •••  | ••• | 100    |  |
| कायतापहातजाातः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | 14     | । यास्याकाक्षम्     | •••  | ••• | 38     |  |

| प्रकरणनाम          | पृष्ठे | प्रकरणनाम           |     |     | <b>रहे</b> |
|--------------------|--------|---------------------|-----|-----|------------|
| संग्रुद्धजातिः     |        | कारकगुप्तजातिः      |     |     |            |
| शुद्धप्राकृतम्     | ३४     | कर्तृगुप्तम्        | ••• | ••• | 84         |
| शुद्धापश्रंशम् ••• | ३५     | कमेगुप्तम्          | ••• | ••• | 84         |
| शुद्धमागधिकम्      | ३५     | करणगुप्तम् •••      | ••• | ••• | 84         |
| शुद्धपैशाचिकम्     | ३६     | संप्रदानगुप्तम् ••• | ••• | *** | 84         |
| शुद्धशैकिकम्       | ३७     | अपादानगुप्तम्       | ••• | ••• | 86         |
| चतुर्थः परिच्छेदः  | 1      | अधिकरणगुप्तम्       | ••• | ••• | 86         |
| प्रहेलिकाजातिः     | ३८     | संबन्धगुप्तजातिः    | ••• | ••• | 86         |
| आर्थीजातिः ••• ••• | ३८     | आमन्त्रितगुप्तजातिः |     | ••• | ४६         |
| शाब्दीजातिः        | ३८     | समासगुप्तजातिः      | ••• | ••• | 86         |
| कालसारजातिः        | ४०     | लिङ्गगुप्तजातिः     | ••• | ••• | ४७         |
| कालसारादिहयजातिः   | ४०     | सुटवचनगुप्तम्       | ••• | ••• | 80         |
| अजमारादिगूढजातिः   | ४२     | तिङ्वनगुप्तम्.      | ••• | ••• | ४७         |
| पादगूडजातिः •••    | ४२     | मात्राच्युतकजातिः   | ••• | ••• | 86         |
| अर्थगूढजातिः       | ४३     | विन्दुच्युतकजातिः   | ••• | ••• | 28         |
| स्तुतिनिन्दाजातिः  | ४३     | विसर्गच्युतकजातिः   | ••• | ••• | 86         |
| ह्यर्थजातिः        | ४३     | अक्षरच्युतकजातिः    | ••• | ••• | 28         |
| अपह्रतिजातिः       | ४३     | स्थानच्युतकजातिः    | ••• | ••• | 88         |
| विन्दुमजातिः       | 88     |                     | ••• | ••• | ४९         |
| क्रियागुप्तजातिः   | ४४     | च्युतदत्ताक्षरजातिः |     | ••• | ४९         |

# समाप्तेयं विषयानुक्रमणी॥

#### श्री: ।

### श्रीधर्मदाससूरिविरचितं

# विद्ग्धमुखमण्डनकान्यम्।

# सटीकम्।

प्रथमः परिच्छेदः।

सिद्धौषधानि भवदुःखमहागदानां पुण्यात्मनां परमकर्णरसायनानि । प्रक्षालनैकसलिलानि मनोमलानां शौद्धोदनेः प्रवचनानि चिरं जयन्ति ॥ १ ॥ जयन्ति सन्तः सुकृतैकभाजनं परार्थसंपादनसद्भतस्थिताः। करस्थनीरोपमविश्वदर्शना जयन्ति वैदग्ध्यभुवः कवेर्गिरः ॥ २ ॥ आक्रान्तेव महोपलेन मुनिना शप्तेव दुर्वाससा सातत्यं वत मुद्रितेव जतुना नीतेव मूच्छी विषै:। वद्वेवातनुरब्जुभिः परगुणान्वक्तं न शक्ता सती जिह्वा लोहशलाकया खलमुखे विद्वेव संलक्ष्यते ॥ ३ ॥ इहानेके सत्यं सततमुपकारिण्युपकृतिं कृतज्ञाः कुर्वन्तो जगति निवसन्त्येव सुधियः। कियन्तस्ते सन्तः सुकृतपरिपाकप्रणयिनो विना खार्थं येषां भवति परक्रत्यन्यसनिता ॥ ४ ॥ एषोऽश्विल: सममसजनसजनी तौ वन्दे नितान्तक्रटिलप्रगणस्वभावौ । एकं भियाभिनवसंहितवैरिभावं श्रीत्या परं परमनिर्वृतिपात्रभूतम् ॥ ५ ॥ किं मेऽथवा हतखलप्रणताविह स्था-त्स स्वीकरोति सुजनो यदि मां गुणज्ञः। चन्द्रेण चारुचरितेन विकासितं य-त्संकोचितं भवति किं कुमुदं तमोभिः ॥ ६॥

संत्रज्य गूढरचनां प्रतिभानुरूपम् ।

श्रीसै सतां तद्नुभावगतावसादः

क्षिप्रावबोधकरणक्षममीक्षितार्थं वक्ष्ये विद्ग्धमुखमण्डनमप्रपञ्चम् ॥ ७ ॥ यद्यस्ति सभामध्ये स्थातुं वक्तुं मनस्तदा सुधियः । ताम्बूङमिव गृहीत्वा विद्ग्धमुखमण्डनं विशत ॥ ८ ॥

उद्देशकम्।

प्राहुर्व्यस्तं समस्तं च द्विर्व्यस्तं द्विःसमस्तकम् । तथा व्यस्तसमस्तं च द्विव्यस्तकसमस्तकम् ॥ ९॥ सद्धिःसमस्तकव्यस्तमेकालापं प्रभिन्नकम् । मेद्यमेदकमोजिख सालंकारं सकौतुकम् ॥ १०॥ प्रश्नोत्तरसमं पृष्टप्रश्नं भग्नोत्तरं तथा । आदिमध्योत्तराख्ये द्वे अन्त्योत्तरमतः परम् ॥ ११ ॥ कथितापह्नुतिं चैव विषमं वृत्तनामकम्। नामाख्यातं च तावर्यं च सौत्रं शाब्दीयशास्त्रजे ॥ १२॥ वर्णवाक्योत्तरे तद्रच्छ्रोकोत्तरमतः परम् । खण्डपादोत्तरे चकं पद्मं काकपदं तथा ॥ १३ ॥ गोमूत्रीं सर्वतोभद्रं गतप्रत्यागतं बहु । वर्धमानाक्षरं तद्वद्वीयमानाक्षरं तथा ॥ १४ ॥ शृङ्खलां नागपाशं च चित्रं संशुद्धमेव च । प्रहेलिकां तथा हृद्यं कालसारादिवर्णितम् ॥ १५ ॥ अजमारादिकं गूढं पदपादार्थगूढकम्। स्तुतिनिन्दां तथा द्यर्थं सहापह्नुतिविन्दुमत् ॥ १६ ॥ क्रियाकारकसंबन्धगुप्तान्यामत्रितस्य च । गुप्तं तथा समासस्य लिङ्गस्य वचनस्य च ॥ १७ ॥ मात्राविन्दुविसर्गाणां च्युतकान्यक्षरस्य च। स्थानन्यञ्जनयोश्रापि च्युतदत्ताक्षरं तथा ॥ १८॥

इत्युद्देशकम्।

पृष्टं पद्विभागेन केवलेनैव यद्भवेत् । विदुर्व्यस्तं समस्तं यत्सम्रदायेन पृच्छति ॥ १९॥ पृष्टमिति । प्रश्रुक्त प्रच्छाते वत्र व्यस्तं प्रष्टम् ॥ ection. पूजायां किं पदं प्रोक्तमस्तनं को विभत्युरः ।

क आयुषतया ख्यातः प्रलम्बासुरिविद्विषः ॥ २०॥
सुनासीरः ॥ सः पूजायाम् । ना पुरुषः । सीरो हलम् ॥
किं दुराल्यस्य मोहाय का प्रिया सुरिविद्विषः ।
पदं प्रश्नवितर्के किं को दन्तच्छद्भूषणम् ॥ २१॥
रामानुरागः ॥ राः धनम् । मा लक्ष्मोः । सु इति वितर्के । रागः आरक्तसम् ॥

इति व्यस्तजातिः।

अपि सेविता द्विजिहैं: कदापि के यान्ति न विकारम् । विच्छिद्यमानतनवः खगुणैरिधकं विराजन्ते ॥ २२ ॥ मळयतरवः ॥ समुदायेन पृच्छियते तत्समस्तं पृष्टम् । मळयतरवश्चन्दनदृक्षाः ॥ अनिभृतकोकिळनिः खन्मुखरितसहकारकाननः पुंसाम् । को हरतितरां हृद्यं मधुकरझंकारिकङ्केलिः ॥ २३ ॥

मधुसमयः ॥ मधोर्वसन्तस्य समयः कालः ॥ इति समस्तजातिः ।

व्यस्तं समस्तमथवा समासपदभङ्गतः । द्विःपृष्टं यत्तदेव साद्विव्यस्तं द्विःसमस्तकम् ॥ २४ ॥

द्विवारं पृथक् पृच्छयते तद्विर्व्यस्तं पृष्टम् ॥ वर्षासु का भवति निर्मधु कीदगव्जं रोषं विभर्ति वसुधासहितं क एकः ।

आमत्रयस्य धरणीधरराजपुत्रीं

को वास्ति भस्मनिचिताङ्गजनाश्रयः स्यात् ॥ २५॥

कालिकापालिकमठः ॥ कालिका स्थामता । अपगता अलयो अमरा यसा-त्तदपालि अमररहितम् । के पानीये मठः स्थानं यस्य सः कमठः कच्छपः । हे कालि हे पाविति, कपालैर्नरमुण्डैविराजते कापालिको योगी तस्य मठः प्रसिद्धः ॥

कीदृशं वद् मरुखं मतं द्वारि कुत्र सित भूषणं भवेत्। त्रृहि कान्त सुभटः सकार्मुकः कीदृशो भवति कुत्र विद्विषाम् २६ अवारितोरणे ॥ न विद्यते वारि जलं यस्मिन् तत् अवारि । तोरणे सित । 'बहिर्द्वारं तु तोरणम्' । रणे संप्रामे अवारितः न वारियतुं शक्यत इस्पवारितः ॥

इति द्विर्व्यस्तजातिः।

पक्षिश्रेष्ठसखीबश्रूसुरा वाच्याः कथं वद् । ज्येष्ठे मासि गताः शोषं कीहदयोऽल्पजला सुवः ॥ २०॥ विवरालीनकुलीराः॥ द्विवारं समुदायेन पृच्छपते तत् द्विःसमस्तकं पृष्टम् । उपस्कृता । नराणां कपालानि कर्पराणि तैः कृता रचिता । रमशानभूमिस्तु मनुष्याणां मुण्डेः सहिता भवति ॥

केसरहुमतलेषु संस्थितः कीहशो भवति मत्तकुः । तत्त्वतः शिवमपेक्य लक्षणेरर्जुनः समिति कीहशो भवेत्।।४०॥ दानवकुलभ्रमरहितः॥ दानेन मदेन वकुलानां वृक्षाणां भ्रमरेभ्यः सकाशात् हितः हितकृदिल्थंः॥ दानवानां दैल्यानां कुले यो भ्रमो दानवा अभी युष्यन्तीति

मिथ्याज्ञानं तेन रहितः ॥ इत्येकालापकजातिः । शब्दार्थलिङ्गवचनैर्ध्यसौर्यद्वा समस्तकैः ।

विभक्तया च प्रभिन्नं यत्तत्प्रभिन्नकमुच्यते ॥ ४१ ॥ शब्दार्थो लिक्नेन वचनेन विभक्तया च मेदं प्राप्ती यस्मिन् तत्प्रभिन्नकं पृष्टम्॥

निर्जितसकलारातेः प्रच्छिति को न हि को मृत्योभयमृच्छिति । मेघात्ययकृतसुचिराशायाः किं तिमिरक्षयकारि निशायाः ॥ ४२॥

विधुतारातेजः ॥ हे विधुताराते, विधुताः कम्पिताः अरातयः शत्रवो येन सः तत्संबोधनम् ॥ अजः ब्रह्मा कृष्णः शंभुरिप च ॥ विधुश्वन्द्रः तारा नक्षत्राणि तासं तेजः प्रकाशः ॥

विहगपतिः कं हतवानहितं की हम्भवति पुरं जनमहितम् ।
किं कठिनं विदितं वद धीमन् यादःपतिरिप की हम्भयकृत् ॥४३॥
अहिमकरमयः॥ अहिं सर्पं॥ अकरं नास्ति करो राजदण्डो यस्मिन् तत्॥
अयो लोहम् ॥ अहिमकरमयः अहयः सर्पाः मकराः मत्स्यविशेषास्तन्मयः॥
इति शब्दार्थे लिङ्गप्रभिन्नकम्।

अनुकूछिवधायिदैवतो विजयी स्यात्रनु कीटशो नृपः। विरिहिण्यपि जानकी वने निवसन्ती मुद्मादधौ कुतः॥ ४४॥

कुरालवर्द्धितः ॥ कुशलैः ग्रुभसूचकशकुनैः वर्द्धितो वर्द्धापितः ॥ कुशश्च लक्ष कुशलवनामानौ पुत्रो तयोर्ऋद्धिः संपत्तस्मात् ॥

कुसुमं पतदेख नाकतो वद कसौ स्पृह्यन्ति भोगिनः। अधिगम्य रतं वराङ्गना क तु यत्नं कुरुते सुशिक्षिता ॥ ४५॥ सुरतरवे॥ कलपृक्षाय वाञ्छन्ति ॥ स्रतस्य संभोगस्य रवः शब्दस्तसिन्॥

इति शब्दार्थविभक्तिभिन्नम् । कामुज्जहार हरिरम्बुधिमध्यमग्नां कीद्दक्शुतं भवति निर्मलमानसानाम् । आमन्त्रयस्व वनमग्निशिखावलीढं

तज्ञापि को दहति के मदयन्ति भृङ्गान् ॥ ४६॥ कुंद्मकरंद्विद्वः॥ कुंप्रथी। दमकरं शमदमउपशमक्षमायुक्तं भवतील्याः।

हे द्विन् द्वो विद्यते यस्मिन् तत् द्वि तःसंबोधनम्। द्वो वनाग्निस्तेन युक्तमिखर्थः। दावो वनाग्निः ॥ कुन्दमकरन्दविन्दवः कुन्दानां पुष्पविशेषाणां मकरन्दः पुष्परसो यन्धस्तस्य विन्दवः कणाः ॥

वसति कुत्र सरोरुह्संतिर्दिनकृतो ननु के तिमिरच्छिदः । पवनभक्षसपत्रणोत्सुकं पुरुषमाह्वय को जगति प्रियः ॥४७॥ के किरणोत्कराः ॥ के पानीये । किरणानां उत्कराः समूदाः । हे केकिरणोत्क, 'केका वाणी मयूरस्य' इत्यमरः । केका विद्यते येषां ते केकिनः केकिनां मयूराणां रणे शब्दे उस्क उत्सुकः तत्संवोधनम् । राः द्रव्यम् ॥

#### इति शब्दार्थवचनभिन्नम्।

कीद्दग्रहं याम्यगृहं गतस्य कास्त्राणमम्भस्तरणे जनानाम्।
भूषा कथं कण्ठगते नु पृष्ठे मुक्ताकलापैरिति चोत्तरं किम्॥४८॥
हाराविनावः ॥ हारावि हा इति खेदे । हा इति रावः शब्दो विद्यते यसिन्
तत् । नावः नौकाः । हे हाराः, वः युष्मान् विना ॥

कवयो वद कुत्र की हशाः कि विदितः समन्ततः। अधुना तव वैरियोषितां हृदि तापः प्रवलो विहाय काः ॥४९॥ गिरिसारमुखाः॥ गिरि वाण्याम् सारं प्रधानम् स्फुटोबारवन्मुखं वदनं येषां ते। गिरिसारं लोहम्। उखाः स्थालीः अन्नरन्धनहण्डिकाः॥

> इति राब्दार्थिछिङ्गविभक्तिवचनभिन्नम्। मेघात्यये भवति किं सुभगावगाहं का वा विडम्बयति वारणमञ्जवेरयाः। दुर्वारवीर्यविभवस्य भवेद्रणे कः

काः सोरवऋसुभगास्तरणिप्रभाभिः ॥ ५०॥

सरोजराजयः ॥ सरस्तडागम् । जरा वयोहानिः । जयः प्रसिद्धः ॥ सरोज-राजयः सरोजानां कमलानां राजयः श्रेण्यः ॥

> पृच्छिति शिरसिरुहो मधुमथनं मधुमथनस्तं शिरसिरुहं च । कः खळु चपळतया भुवि विदितः का नतु यानतया गवि गदिताः॥ ५१ ॥

केशवनौकाः ॥ हे केशव हे हरे । हे केश हे वाल । वनौकाः वने ओको ग्रहं यस्यासौ वनौकाः वानरः । नौकाः नावः ॥

इति शब्दार्थछिङ्गवचनभिन्नम् ।

न भवति मलयस्य की हशी भूः क इह कुचं न बिभर्ति कं गता श्रीः। भवद्रिनिवहेषु कास्ति नित्यं बलमथनेन विपद्म्यधायि केषाम् ॥५२॥ विपन्नगानाम्॥ विपन्नगा विगताः पन्नगाः सर्ग यस्याः सा ईहशी न, किंतु २ विद०

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

पन्नगसहितव । ना पुमान् । अम् कृष्णम् । विपत् संपदोऽभावः अलक्ष्मीः दिस्ता।

नगानां पर्वतानाम् ॥ समयमिह् वदन्ति कं निशीथं शमयति कान्वद् वारिवाहदृन्दम् । वितरति जगतां मनःसु कीदृङ्खुद्मतिमात्रमयं महातडागः ॥ ५३ ॥

अरविंद्वान् ॥ अरविं नास्ति रविः सूर्यो यस्मिन् सः अरविस्तम् । द्वान् दावानलान् । अरविन्दवान् । अरविन्दानि कमलानि विद्यन्ते यस्मिन् सोऽरविन्द् वान् । मलन्तः ॥

इति शब्दार्थविभक्तिवचनभिन्नम्। कीदृक्षं समिति बलं निहन्ति शत्रुं विष्णोः का मनसि मुदं सदा तनोति। तुच्छं सच्छरिधमुखं निगद्यते किं पञ्चत्वैः सममपमान एव केषु॥ ५४॥

अभिमानिषु ॥ अभि, नास्ति भीभँगं यस्य तत् । मा लक्ष्मीः । अनिषु न विद्यन्ते इषवो वाणाः यस्मिन् तत् । अभिमानिषु गर्ववत्सु ॥

घनसमये शिखिषु स्थात्रृत्यं कीदक्षु किं घनात्पतति।

प्रावृषि कस्य न गमनं मानसगमनाय कीटशा हंसाः ॥५५॥ समुत्सुकमनसः॥ समुत्सु मुदा हर्षेण सहवर्तमानाः समुद्रस्तेषु । कं पानीयं अनसः शकटस्य । समुत्सुकमनसः सं सम्यक् उत् प्रावल्येन सु अतिशयेन यत् उत्सं तत्समृत्सुकम् 'इष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः' इत्यमरः । समुत्सुकं उत्कण्ठामुक्तं मनो येषां ते।

इति शब्दार्थिलिङ्गवचनभिन्नम्। इति प्रभिन्नकजातिः।

अर्थमात्रैकमेदेन भिन्नं बझन्ति केचन ।
सुकुमारा धियस्तच विदग्धैनीहतं यथा ॥ ५६ ॥
आनन्दयति कोऽत्यर्थं सज्जनानेव भूतले ।

प्रबोधयति पद्मानि तमांसि च निह्नि कः ॥ ५७ ॥

मित्रोद्यः ॥ मित्राणां सखीनां उदयो वृद्धिः । मित्रस्य सूर्यस्य उदय उद्गमनम्। अटवी कीहशी प्रायो दुर्गमा भवति प्रिये ।

प्रियस्य की हशी कान्ता तनोति सुरतोत्सवम् ॥ ५८ ॥

मद्नवति ॥ मद्ना मद्नवृक्षाः विद्यन्ते यस्यां सा । अतिगहनलाहुर्गमा मदनः कामो विद्यते यस्याः सा । सयौवना इत्यर्थः ॥

इति प्रकारान्तरेण प्रभिन्नकजातिः। भिन्नाववश्यं कर्तव्यो शब्दार्थौ प्रश्नपण्डितैः। लिङ्गाङ्गिषु यथाशक्ति भेदमाहुर्मनीषिणः॥५९॥ इति प्रथमः परिच्छेदः।

ond s

### द्वितीयः परिच्छेदः। विशेषणं विशेष्येण यत्र प्रश्ने विधीयते। भेद्यमेदकमाहुर्त्तं प्रश्नं प्रश्नविदो यथा।। १।।

यसिन्पृष्टे विशेष्येण युक्तं विशेषणं क्रियते तत् मेद्यमेदकं मेद्यं च भेदकं च भेद-भेदके भेद्यभेदके यसिन् तत् भेद्यभेदकं पृष्टम् ॥

कीदिक स्थात्र मत्स्थानां हितं खेच्छाविहारिणाम्।
गुणैः परेषामत्यर्थे मोदते कीदशः पुमान्॥ २॥

विमत्सरः ॥ वयः पक्षिणो विद्यन्ते यस्मिन् तत् विमत् ईदशं सरस्तडागः । विगतो मत्सरः अहंकारो यस्य सः ॥

अगस्त्येन पयोराज्ञेः कियत्किं पीतमुन्झितम्। त्वया वैरिकुछं वीर समरे कीटशं कृतम्॥ ३॥

सकलंकं ॥ सकलं समस्तं कं पानीयं पीतम् । मूत्रं च सकलक्कं कलक्केनाननला-ज्छनेन सहवर्तमानं कृतम् ॥

इति भेद्यभेदकजातिः । दीर्घवृत्तेन यत्पृष्टग्रुत्तरं कियदश्वरम् । तदोजस्वीति विख्यातमूर्जितं चेति केचन ॥ ४ ॥

यत्पृष्टं वीर्घश्चोकेन पृच्छ्यते तस्योत्तरं स्तोकैरक्षरैभंनेत् तत् ओजिख पृष्टम् ॥ कामिन्याः स्तनभारमन्थरगतेर्छीलाचलचक्षुषः

कंद्र्पैकविलासनित्यवसतेः की हक्पुमान्वल्लभः । हेलाकृष्टकृपाणपाटितगजानीकात्कृतस्तेऽरयः

श्वासायासविशुष्ककण्ठकुहरा निर्यान्ति जीवार्थिनः ॥ ५ ॥ समरतः ॥ समं तुल्यं रतं भोगिकया यस्य सः । समरतः संप्रामात् ॥ दैत्यारातिरसौ वराहवपुषा कामुज्जहाराम्बुधेः

का रूपं विनिहन्ति को मधुवधूवैधव्यदीक्षागुरुः । स्वच्छन्दं नवशक्षकीकवछनैः पम्पासरोमज्जनैः

के विन्ध्याद्रिवने वसन्त्यभिमतकीडाभिरामस्थिताः ॥ ६ ॥ कुंजराः ॥ कुं पृथ्वीम् । जरा बृद्धलम् । अः कृष्णः । कुष्रराः हस्तिनः ॥

इत्योजस्विजातिः।

उपमादिरलंकारो बहुधा परिकीर्तितः । यत्नेन कथ्यते सार्धं सालंकारं तदुच्यते ॥ ७॥ अलंकारैः सहवर्तमानं सालंकारं पृष्टम् ॥

कल्याणवाक्त्विमव किं पदमत्र कान्तं सद्भूपतेः स्वमिव कः परितोषकारी।

कः सर्वदा वृषगतिः स्विमवातिमात्रं भूत्याश्रितः कथय पालितसर्वभूतः ॥ ८॥ शंकरः ॥ शं धुखम् । करो राजमागः । शंकरो महादेवः ॥ सूर्यस्य का तिमिरकुश्वरवृन्दसिंही सत्यस्य का सुकृतवारिधिचन्द्रलेखा । पार्थश्च की हगरिदावहुताशनोऽभू-

त्का माळतीकुसुमदाम हरस्य मूर्त्रि ॥ ९ ॥

भागीरथी ॥ भा कान्तिः । गीः वाणी । रथी रथो विद्यते यस सः । भगीः रथेन आनीता भागीरथी गङ्गा ॥

रूपकं सालंकारजातिः।

लघुवृत्तेन यत्पृष्टं प्रभूताक्षरमुत्तरम् ।
सकौतुकमितीच्छन्ति तद्विदस्तदिदं यथा ॥ १०॥
लघुक्षोकेन यत्पृष्टं पृच्छयते तस्योत्तरं बह्वक्षरैर्भवेत् तत्सकौतुकं पृष्टम् ॥
के स्थिराः के प्रियाः स्रीणां कोऽप्रियो नक्तमाह्वय ।
नृत्यभूः कीदृशी रम्या नदी कीद्रग्धनागमे ॥ ११॥

अगाधवारिपूरजनिततरंगा ॥ अगाः पर्वताः । घवाः मर्तारः । रिपुः शतुः । हे रजि । ततरंगा ततो विस्तीर्णो रङ्गो नर्तनमण्डपो यस्याः सा । अगाधेन अतलस्र र्शेन वारिपूरेण जलसमूहेन जनिता उत्पादितास्तरंगा लहयों यस्यां सा ॥

का कृता विष्णुना कीद्रग्योषितां कः प्रशस्यते । असेव्यः कीद्रशः खामी को निह्न्ता निशातमः ॥ १२॥

कुमुद्वनबान्धवोद्यः॥ कोः पृथित्याः मृत् कुमुत्। पृथित्याः मध्ये प्रीतिः कृतेल्यर्थः। अवनं रक्षणं विद्यते यस्यासौ अवनवान् रक्षाकरः। धवो भर्ता। सिवशेषणमुत्तरं अत्र कृतम्। नास्ति दया यस्य सः अदयः दयारहितः। अथवा 'दय दाने'। नास्ति दयो दानं यस्य सः अदयः अदाता॥ कुमुदानां चन्द्रविकासिकमः लानां वानधवो भ्राता चन्द्रस्तस्योदयः प्रकटभावः॥

इति सकौतुकजातिः।

प्रश्नवर्णविधेस्तुल्यं यत्र सादुत्तरं वरम् । प्रश्नोत्तरसमं तज्ज्ञास्तदाहुः श्रूयतां यथा ॥ १३॥

प्रश्रथ उत्तरं च प्रश्नोत्तरे ताभ्यां समं युगपद्भवनमेकीभूतं प्रश्नोत्तरसमं पृष्टम्।

कंदर्प मद्जनकं प्राहुः काचघटी गदिताच्छतमेह । इत्यादि प्रश्ने युक्तं यदुत तद्भृद्धुत्तरमाशु विचिन्त्य ॥ १४॥ कंदर्प कामं । काचघटी काचः प्रतिदः अतिनिर्मल्स्सस्य घटी कृपिका ॥ पथिकस्तिष्ठति कष्टं विरही नाविक आस्ते तत्क्रतरक्षः । इत्यादि प्रश्ने युक्तं यह्नृहि तदुत्तरमुत्तमपूरुष ॥ १५॥ पथि मार्गे चलति सः पथिकः । नाविकः पोतवाहः ॥

इति प्रश्नोत्तरसमजातिः। यसिन्नुत्तरमुचार्य प्रश्नस्तस्यैव पृच्छ्यते। पृष्टप्रश्नं तदिच्छन्ति प्रश्नोत्तरविदो यथा॥ १६॥

यसिन् प्रश्नविषये प्रथममुत्तरस्योचारं कृला तस्यैवोत्तरस्य पुनः प्रश्नः पृच्छयते तत् पृष्टप्रश्नं नाम पृष्टम् ॥

लक्ष्मणेत्युत्तरं यत्र प्रश्नः स्यात्तत्र कीदृशः। श्रीष्मं द्विरदृशृन्दाय वनाली कीदृशी हिता ॥ १७ ॥

कासारसहिता ॥ अत्र का सारसहिता इति प्रश्नः प्रथमवारमेव । द्वितीय-वारं तूत्तरम् । सारसस्य पक्षिणो हिता प्रिया का इति प्रश्नः । 'इंसस्य योषिद्वरटा सार-सस्य तु लक्ष्मणा' इत्यमरः । कासारेण आखातसरोवरेण सहिता सहवर्तमाना ॥

चाद्य इति यत्र स्यादुत्तरमथ तत्र कीहशः प्रश्नः । कथय त्वरितं के स्युनौंकाया वाहनोपायाः ॥ १८॥

केनिपाताः ॥ अत्रापि के निपाता इति प्रश्नः प्रथमवारमेव । द्वितीयवारं तूत-रम् । निपाताः के भवन्तीति प्रश्नः । चादयो निपातसंज्ञाः । के पानीये निपतन्ति ते केनिपाताः । अछक्समासः 'हालेसा' इति भाषा ॥

इति पृष्टप्रश्चजातिः।

कथयाग्रकमित्यादि भङ्क्तवा यत्रोत्तरं भवेत्। भग्नोत्तरं तदिच्छन्ति काक्कमात्रेण गोपितम्॥ १९॥

अनिर्दिष्टं पृष्टं भक्कला यत्रोत्तरं भवेत् तत् भमोत्तरं भमं उत्तरं यस्मिन् तत् भमोत्तरं पृष्टम् ॥

भवत इवातिस्वच्छं कस्याभ्यन्तरमगाधमतिशिशिरम्। काव्यामृतरसमग्रस्त्वमिव सदा कः कथय सरसः॥ २०॥

शब्दविकारमात्रेण गोपितं उत्तरमन्तपदे सरसखडागस्य रसेन शक्तारादिना सह-वर्तमानः सरसः पुमान् ॥

वीरे सरुषि रिपूणां नियतं का हृद्यशायिनी भवति । नमसि प्रस्थितजल्दे का राजति हन्त वद् तारा ॥ २१ ॥

अत्राप्युत्तरमन्तपदे । आरा चर्मप्रमेदिनी । शत्रूणां मनसि दुःखरूपा आरा तारा । 'नक्षत्रमृक्षं भं तारा' इसमरः ॥

इति भन्नोत्तरजातिः । यत्पृष्टं प्रश्नवाक्ये सादादिमध्यान्तसंस्थितम् । उत्तरं तित्रधा प्रोक्तमादिमध्यान्तसंज्ञितम् ॥ २२॥

प्रश्नानां पदसमुदाये आदी यदुत्तरं भवेत् तत् आद्युत्तरं पृष्टम् ॥

भ्रमरहितः की दृक्षो भवतितरां विकसितः पद्मः। ज्योतिषिकः की दृक्षः प्रायो भुवि पूज्यते छोकैः॥ २३॥

अमरहितः अमराणां मुङ्गाणां हितो हितकृत् । अमेण मिथ्यामत्या रहितः शुद्धज्ञानवान्॥

प्रभवः को गङ्गाया नगपतिरतिसुभगशृङ्गधरः । के सेव्यन्ते सेवकसार्थैरत्यर्थमर्थरतैः ॥ २४ ॥

प्रभवः उत्पत्तिस्थानम् । प्रभवो महान्त ईश्वराः । आद्युत्तरजातिरिति प्रश्नानां पदसमुदायमध्ये यदुत्तरं भवेत् तत् मध्योत्तरं पृष्टम् ॥

इत्याद्युत्तरजातिः।

अयमुदितो हिमरिइमर्वनितावदनस्य की हशः सहशः। नीलादिकोपलम्भः स्फुरित प्रत्यक्षतः कस्य।। २५॥

सहराः समान इव दश्यतेऽसौ तुल्य इत्यर्थः । दशा नेत्रेण सहवर्तमानः सदक् तस्य सदशः सनेत्रस्य मतुष्यस्य ॥

गैरिकमनःशिलादिः प्रायेणोत्पद्यते कुतो नगतः।

यः खलु न चलति पुरुषः स्थानादुक्तः स कीहश्रः ॥ २६॥ नगतः नगत्पर्वतात् न गतः स न जगामेखर्थः ॥ प्रश्नानां पदसमुदायी अन्ते यदत्तरं भवेतत् अन्तोत्तरं पृष्टम् ॥

इति मध्योत्तरजातिः । कस्मिन्वसन्ति वद् मीनगणा विकल्पं किंवापदं वद्ति किं कुरुते विवस्तान् । विद्युद्धतावलयवान्पथिकाङ्गनाना-

मुद्रेजको भवति कः खळु वारिवाहः ॥ २७॥ वारिवाहः । वारिवाहो मेघः॥

शब्दः प्रभूगत इति प्रचुराभिधायी कीदग्भवेद्वद्त शब्दविदो विचिन्स । कीदग्बृहस्पतिमते विदिताभियोगः

प्रायः पुमान्भवति नास्तिकवर्गमध्यः ॥ २८॥

नास्तिकवर्गमध्यः न अस्ति न विद्यते कवर्गी गकारो मध्ये यस सः कवर्गः मध्यप्रभूगतोऽत्रं शब्दः । कोऽर्थः । यदा प्रभूगतस्य मध्यात्कवर्गायो गकारो छप्पवे तदा प्रभूत इत्येवावशिष्यते । प्रभूतः प्रचुरवाची । नास्तिकानां अपुनर्जन्मवादिनं वर्गः समूहस्तस्य मध्येऽन्तर्वतीं । नास्ति परलोके मतिर्येषां ते नास्तिका इवि व्युत्पत्त्या तेषां मतं भित्रमेवास्ति ॥

इत्यन्तोत्तरजातिः।

## पदान्तरादिसंबन्धात्प्रश्नवाक्येऽपि संस्थितम् । कथितापह्नतिः सा स्याह्नक्ष्यते यत्र नोत्तरम् ॥ २९ ॥

यत्पृष्टं प्रश्नवाक्ये संस्थितमपि पदान्तरेषु गोपनात् उत्तरं न ज्ञायते तत्कथितापः ह्यति पृष्टम् ॥

पृथ्वीसंबोधनं कीद्यक्कविना परिकीर्तितम् । केनेदं मोहितं विश्वं प्रायः केनाप्यते यशः ॥ ३०॥

कथितस्य भाषितस्यापि अपह्नतिः निह्नवनं यस्मिन् तत् । कविना इति उत्तरम् । को हे पृथ्वि । इना कामेन । कविना काव्यकर्त्रो ॥

कस्य मरौ दुरिधगमः कमले कः कथय विरिचतावासः। कैस्तुष्यति चामुण्डा रिपवस्ते वद कुतो भ्रष्टाः॥ ३१॥

कस्य इत्युत्तरम् । कं जलं तस्य । को ब्रह्मा इत्युत्तरम् । कैर्मस्तकैरित्युत्तरम् । कुतः पृथित्याः सकाशादित्युत्तरम् । पृथ्व्याधिकारात्पतिता इत्यर्थः ॥

इति कथितापह्नुतिजातिः । यत्र भक्तस्य वैषम्यं विषमं तन्निगद्यते ।

यत्र प्रश्ने भक्तस्य रचनायाः दुष्करत्वं भवति तत् विषमं पृष्टम् ॥ कीद्यवनं स्यात्र भयाय पृष्टे यदुत्तरं तस्य च कीदृशस्य । वाच्यं भवेदीक्षणजातमम्बु कं चाधिशेते गवि कोऽर्चनीयः ॥३२॥

अहिंस्नमहिमः ॥ अहिंसं न सन्ति हिंसाः घातुका जीविवशेषाः यस्मिन् तत् । अहिमः न विद्यते हिम् अहिम् तस्य अहिमः सतः। कोऽर्थः। यदा अहिंस्रशब्दात् हिम् द्रीकियते तदा असं इति तिष्ठति । असं नेत्रजलं अश्रुपातः। अहिं शेषनागम् । अः कृष्णः पूज्यः सन् अधिशेते ॥

प्रायः कार्ये न मुह्यन्ति नराः सर्वत्र कीदृशाः । नाधा इति भवेच्छब्दो नौवाची वद कीदृशः ॥ ३३ ॥

सावधानाः ॥ सह अवधानेन समाधिना वर्तन्त इति सावधानाः । 'समाधि-नियमे ध्याने' इत्यमरः । अव्यमित्ता इत्यर्थः । सौ अधा ना सू इति पदच्छेदः । अत्यार्थः-औकारेण सहवर्तमानः सौ नधा अधा धारिहतः एवंविधः ना इति शब्दः । सकारस्य विसर्गः । नोः इति नौवान्ति भवेदिति योजना । अस्यायं विधिः-नाधा इत्यन्न ना धा इति मिन्नो लिख्येते ना इति सौ औकारेण सहितः कियते तदा नौ इति स्यात् । अधा धा इति दूरीकियन्ते स् इत्यस्य विसर्गः कियते । नौः इत्येवं सिद्धाति नौकावानी जातः ॥

> इति विषमजातिः । वृत्तनामोत्तरं पृष्टं भवेत्तद्वृत्तनामकम् ॥ ३४ ॥

वृत्तानां छन्दसां नाम यंसिन् उत्तरे तत् वृत्तनामकं पृष्टम् ॥ गतक्षेशायासा विमलमनसः कुत्र मुनय-स्तपस्यन्ति खच्छाः सुररिपुरिपोः का च द्यिता। कविप्रेयः किं स्यान्नवलघुयुतैरष्टगुरुमि-र्बुधा वृत्तं वर्णैः स्फुटघटितबन्धं कथयत ॥ ३५ ॥

शिखरिणी ॥ शिखराणि विद्यन्ते यसिनसी शिखरी तसिन् । शिखरि

पर्वते । ई लक्ष्मीः । विखरिणीछन्दः ॥

उरसि मुरमिदः का गाढमालिङ्गितास्ते सरसिजमकरन्दामोदिता नन्दने का।

गिरिसमलघुवणेरर्णवाख्यातिसंख्यै-र्गुरुमिरपि कृता का छन्द्सां वृत्तिरम्या ॥ ३६ ॥

मालिनी ॥ मा लक्ष्मीः । अलिनी भ्रमरी । मालिनी नाम छन्दोवृत्तम् ॥ इति वृत्तनामजातिः।

एकमेवोत्तरं यत्र सुश्लिष्टलाद्विधा भवेत् । सुप्तिङन्तप्रमेदेन नामाख्यातं तदुच्यते ॥ ३७ ॥

युवन्ततिङन्तयोभेंदेन युगुप्तलाद्विधा भवेत् यत्र प्रश्ने एकमेवोत्तरं तत् नामाख्या तं पृष्टम् । नाम च आख्यातं च नामाख्याते ते विद्येते यस्मिन् तत् ॥

समरशिरसि सैन्यं की हशं दुर्निवारं विगतघननिशीथे कीहरो व्योम्नि शोभा। कमपि विधिवशेन प्राप्य योग्यामिमानं जगद्खिलमनिन्दं दुर्जनः किं करोति ॥ ३८॥

अभिभवति ॥ अभि नास्ति भीर्यस्य तत् भयरहितं भवति । भानि नक्षत्रावि विश्वन्ते यस्मिन् तत् भवत् तस्मिन् भवति नक्षत्रयुक्ते । अभिभवति पराभवति। नीत्रे वृद्धिं गतो दुःखदायक एव भवेदिति नीतिः । प्रथमपुरुषैकवचनम् ॥

> पद्मनन्तरवाचि किमिष्यते कपिपतिर्विजयी ननु की हशः। परगुणं गदितुं गतमत्सराः क्रुहत किं सततं भुवि सज्जनाः ॥ ३९ ॥

अनुसरामः ॥ अनु पश्चाद्वाची । रामेण सहवर्तमानः सरामः । अनुसरामः व परमगुणं प्रति अनुसरणं कुर्मः । उत्तमपुरुषबहुवचनम् । स्ट्र ॥

वद्ति रामममुष्य जघन्यजो वसति कुत्र सदाळसमानसः। अपि च शक्रसुतेन तिरस्कृतो रविसुतः किमसौ विद्वे त्वया ॥४०॥

24

भवति गमनयोग्या कीहशी भू रथानां किमतिमधुरमम्छं भोजनान्ते प्रदेयम्। प्रियतम वद नीचामञ्जणे किं पदं स्था-

त्कुमतिकृतविवादाश्चिकिरे किं समर्थैः ॥ ४१ ॥

समाद्धिरे ॥ समा अविषमा। दिध क्षीरजम्। रे इति नीवसंबोधने दीयते। रे दास। समादिधरे समानत्वेन स्थापिताः। विवादस्य वा समाधानं कृतम्॥ छिट् ॥

वदतानुत्तमवचनं ध्वनिरुचैरुच्यते स कीदृक्षः।

तव सुहृदो गुणनिवहै रिपुनिवहं किं नु कर्तारः ॥ ४२ ॥ अवमंतारः ॥ अवमं नीचार्थवाचकम् । तारः अत्युचैर्ध्वनिः । अवमन्तारः । असिन्मित्राणि रिपूणामपमानं करिष्यन्तीलर्थः । तारस् इलस्य हृपम् ॥

की हक्तोयं दुस्तरं स्थात्तितीषों:
का पूज्यास्मिन्खङ्गमामन्नयस्व।
हृष्ट्वा धूमं दूरतो मानविज्ञाः
किं कर्तास्मिन्प्रातरेवाप्रयासम्॥ ४३॥

अनुमातासे ॥ न विद्यते नौः यत्र तत् अनु । नौकारहितमिस्पर्थः । माता जनित्री । हे असे हे खन्न । अनुमातासे लमनुमानं करिष्यसि ॥ छुट् ॥

कामुकाः स्युः कया नीचाः सर्वे कस्मिन्प्रमोदते ।

अर्थिनः प्राप्य पुण्याहं करिष्यध्वे वसूनि किम् ॥ ४४ ॥ दास्यामहे ॥ दासा । दासी चात्र मौल्येन क्षीता वेश्या वा गृह्यते । महे महो-त्सवे । 'मह उद्धव उत्सवः' इस्पमरः । वयं दास्यामहे दानं दास्यामः ॥

को दुः सर्वकार्येषु कि भृशार्थस्य वाचकम्।

यो यसाद्विरतो नित्यं ततः किं स करिष्यति ॥ ४५ ॥

प्रयास्यति ॥ प्रयास आयासोऽस्यास्ति सः प्रयासी । अति असर्थे प्रसिद्धः । प्रयास्यति प्रकर्षेण तत् स्थानं विमुच्च गमिष्यति ॥ ऌट्ट ॥

विद्यन्त इति समानार्थः शब्दः को चिरयति मुद्रां किम्।

कथमि यदि ते कोपः स्यात्त्वां सुजन किं करोतु वद ॥ ४६॥ संत्यजतु ॥ सन्ति विद्यन्ते । अजतु अलाक्षा । लाक्षाव्यतिरिक्तमन्यिकिनिदिष मुदिकामिण स्थापियतुं न च शकोति । अयं भावार्थः । संस्यजतु सः मां संस्यज्य दूरेण गच्छतु इस्रर्थः ॥

मेघात्यये भवति का सुभगावगाहा वृत्तं वसन्ततिलका कियदश्वराणाम्। भो भो कद्यपुरुषा विषुवहिनं च

वित्तं च वः सुबहु तिक्रंयतां किमेतम्।। ४७॥

नदीयतां ॥ नदी प्रसिद्धा । इयतां एतत्परिमाणमेषां तानि इयन्ति तेषां एता-वदक्षराणामेव भवति । अस्मामिनं दीयंताम् ॥ छोट् ॥

का माद्यति मकरन्दैस्तनयं कमसूत जनकराजसुता।

कथय कृषीवल सस्यं पकं किमचीकरस्त्वमि ॥ ४८॥

अलीलवं ॥ अली भ्रमरः । हवं हवनामानं पुत्रम् । अहं अलीलवं छेदनम्. कारयम् ॥

पृच्छति पुरुषः केऽस्यां समभूवन्वज्रकृत्तपक्षतयः।

बहुभयदेशं जिगमिषुरेकाकी वार्यते स कथम्।। ४९।।

मानवनगाः ॥ हे मानव । नगाः पर्वताः । इन्द्रेण हि पर्वतानां पक्षच्छेदः हत । इति पौराणिका वदन्ति । मानवनगाः हे अनवन न विद्यते अवनं रक्षणं यस सः अनवनः तत्संबोधनं हे अरक्षक, त्वं मागाः गमनं मा क्रयोः ॥ खुङ् ॥

किमकरवमहं हरिर्महीधं

स्वभुजबलेन गवां हितं विधित्सुः।

प्रियतमवद्नेन पीयते कः

परिणतबिम्बफलोपमः प्रियायाः ॥ ५०॥

अधरः ॥ हे कृष्ण, त्वं गोवर्धनपर्वतं अधरः हस्ते धृतवान् । अधरः ओष्टः।

परिहरति भयात्तवाहितः कं

कमथ कदापि न विन्दतीह भीतः।

कथय किमकरोरिमां धरित्रीं

नृपतिगुणैर्नृपते वरस्त्वमेकः ॥ ५१ ॥

समरंजयं ॥ समरं संप्रामम् । जयं जयवादम् । अहं समरंजयं रागिणीं पृष्तीः मकरवम् ॥ छङ् ॥

कीहक्सेना भवति रणे दुर्वारा

वीरः कसौ स्पृह्यति लक्ष्मीमिच्छन्।

का संबुद्धिभेवति भुवः संप्रामे

किं कुर्वीध्वं सुभटजना भ्रातृव्यान् ॥ ५२ ॥

पराजयेमहि ॥ परा उत्कृष्टा । उत्कृष्टा एव सेना जयं प्राप्तुयादिलयः । आजवे संप्रामाय । हे महि हे पृथ्वि । वयं पराजयेमहि जयेम ॥

कंसारातेर्वद गमनं केन स्था-

त्कस्मिन्दृष्टिं संलभते खल्पेच्छः।

### कं सर्वेषां ग्रुमकरमूचुधीराः

किं कुर्यास्त्वं सुजन सशोकं छोकम् ॥ ५३ ॥

विनोद्येयं॥ विना गरुडेन । उदये सित परस्योन्नतौ सत्यां । अयं भारयं । अयमि-त्यकारान्तशब्दस्य द्वितीयैकवचनम् । अहं तं विनोद्येयं विनोदेन युक्तं कुर्यामित्यर्थः । विधिसंभावनयोः लिङ् ॥

> वारणेन्द्रो भवेत्कीहक्त्रीतये भृङ्गसंहते: । यद्यवक्ष्यं तदासौ किमकरिष्यमहं धनम् ॥ ५४ ॥

समदास्यः ॥ समदं मदसहितं आस्यं मुखं यस्य सः । भ्रमरा हि गजानां मद-माघाय हृष्यन्ति । समदास्यः त्वं दानं व्यतिरिष्यः ॥

> काले देशे यथायुक्तं नरः कुर्वन्नुपैति कान् । भुक्तवन्तावल्प्सेतां किमन्नमकरिष्यताम् ॥ ५५ ॥

अहास्यतां ॥ हास्यस्य भानो हास्यता न हास्यता अहास्यता ताम् । युक्तिकयां कुर्वतो न कश्चिद्धसेदिस्यर्थः । अहास्यतां 'ओहाक् स्यागे' कियातिपत्तौ स्यप् । तदन्नं तावत्त्यक्ष्यतामिस्यर्थः ॥ स्टब्स् ॥

इति नामाख्यातजातिः । ज्ञेयं ताक्यंदशा ताक्यं सौत्रं सूत्रोत्तरैस्तथा । शाब्दीयं शब्दसंज्ञाभिः शास्त्रजं शास्त्रभाषया ॥ ५६ ॥ तर्कशास्त्रे भवं ताक्यं पृष्टम् ॥

हिमानीस्थिगिरौ स्यातां की हशौ शशिभास्करौ।

कः पूच्यः कः प्रमाणेभ्यो न प्रभाकरसंमतः ॥ ५७ ॥

अभावः ॥ अभौ नास्ति भा बीप्तिर्थयोस्तौ कान्तिरहितौ । अः कृष्णः । अभावः प्रमाणशास्त्रे प्रसिद्धः । अभावो नाम सप्तमः पदार्थः । प्रामाकरास्तु अभावरूपं सप्तमं पदार्थे प्रमाणत्वेन न मन्यन्ते ॥

के प्रवीणाः कुतो हीनं जीर्ण वासोंऽशुमांश्च कः । निराकरिष्णवो बाह्यं योगाचाराश्च कीदृशाः ॥ ५८ ॥

विज्ञानवादिनः ॥ विज्ञाः विशेषेण जानन्ति ते चतुराः । नवात् जूतनात् । जीर्णं हि वस्नं नवात् हीनमूर्वं स्यादित्यभिप्रायः । इनः सूर्यः । विज्ञानवादिनः विशेषेण ज्ञानस्य तत्त्वार्यज्ञानस्य वादो विद्यते येषु ते विज्ञानवादिन इति पदं तर्कशास्त्रे प्रसिद्ध-त्वात् तार्क्यजातिरिति । सूत्रे भवं सौत्रं पृष्टम् ॥

इति ताक्यंजातिः। को नयति जगद्रोषं क्षयमथ बिमरांबभूव कं विष्णुः। नीचः कुत्र सगर्वः पाणिनिसूत्रं च कीदृक्षम्।। ५९॥ 36

यमोगंधने ॥ यमः कृतान्तः । अगं परिशेषाद्गोवर्धनम् । धने द्रव्ये । 'यमो गन्धने' पाणिनीयव्याकरणमध्ये इदं सूत्रमस्ति ॥

किं स्याद्विशेष्यनिष्ठं का संख्या वदत पूरणी भवति । नीचः केन सगर्वः सूत्रं चन्द्रस्य कीदृक्षम् ॥ ६० ॥

विशेषणमेकार्थेन विशेषणम् । एका । ग्रून्यानां संख्यापूरकं एकमेव भवति । एकादिरक्को लिख्यते तदा विन्दूनां साफल्यं स्यादन्यथा ग्रून्यमेव । अथवा एकद्वित्र्या-दिका संख्या । अथवा ऊनानामेकत्रिपश्चादीनां पूरण्येका एव संख्या समसंज्ञा कर्त्री भवेदित्याकृतम् । अर्थेन द्रव्येण । 'विशेषणमेकार्थेन' इदं चान्द्रव्याकरणसूत्रमस्तीति ॥

इति सौत्रजातिः।

शब्दानामिदं शाब्दीयं व्याकरणम् ॥ शाब्दे भवं शाब्दीयं पृष्टम् ॥
न ऋाघते खलः कस्मै सुप्तिङन्तं किमुच्यते ।
लादेशानां नवानां च तिङां किं नाम कथ्यताम् ॥ ६१ ॥
परसौपदम् ॥ परसौ आत्मव्यतिरिक्तः परः अन्यसौ न सौति । पदं पदसंशं
सुप्तिङन्तं पदं परसौपदम् । नवानां अपि तिङां तिप् तस् अन्ति इत्यादीनां परसौपदसंशा ॥

सततं ऋाघते कसौ नीचो भुवि किमुत्तमम् । कर्तर्यापरुचादीनां धातूनां किं पदं भवेत् ॥ ६२ ॥

आत्मनेपद्म् ॥ आत्मने खस्मै । पदं प्रतिष्ठास्थानम् । आत्मनेपदं ते आते अन्ते इलादीनि नववचनानि भवन्तीति भावार्थः ॥

किमन्ययतया ख्यातं कस्य छोपो विधीयते । ब्रूत शब्दविदो ज्ञात्वा समाहारः क उच्यते ॥ ६३ ॥

स्वरितः॥ खर् अव्ययं खर्गे निपातः । इतः इत्यंत्रकस्य । खरितः । हखाद्यस्रयः खराः प्रत्येकमुदात्तानुदात्तखरितसंज्ञाः। समाहारः खरित इति तात्पर्यार्थः ॥

इति शाब्दीयजातिः । शास्त्राजातं शास्त्रजं पृष्टम् ॥

मेघात्यये भवति कः सुमदः सुभगं च किं कमधरन्मुरजित्। कटुतैल्लमिश्रितगुडो नियतं विनिद्दन्ति कं त्रिगुणसप्तदिनैः।।६४॥ श्वासरोगम् ॥ श्वा भवकः तेषु दिनेषु मैथुनेच्छो भवेत् । सरस्तडाकम् अगं गोवर्धनपर्वतम्। श्वासरोगम् ॥

कीद्दक्प्रातर्दीपवर्तेः शिखा स्था-दुष्ट्रः प्रच्छत्याभजन्ते मृगाः किम् । देवामात्ये किं गते प्रायशोऽस्मि-ह्योकः कुर्यान्नो विवाहं विविक्तः ॥ ६५ ॥ विभाकरभवनम्॥ विभा विगता भा कान्तिर्यस्याः सा । हे करम उष्ट्र । वनम् । विभाकरभवनं विभाकरस्य सूर्यस्य भवनं गृहं तत् । सिंहराशिं गते जीवे छोका वि-वाहादिश्चमकार्याणि न कुर्वन्ति । सिंहस्याधिपतिः सूर्यः॥

इति शास्त्रजजातिः। वर्ण एवोत्तरं यत्र तद्वर्णोत्तरमुच्यते। वाक्यं यत्रोत्तरं तत्तु वाक्योत्तरमिति स्मृतम् ॥ ६६॥

वर्णः एकाक्षरमेव उत्तरं यस्मिन् तत् वर्णोत्तरं पृष्टम् ।

कौ विख्यातावहै: शत्रू शोकं वहति किं पद्म् । कोऽभीष्टोऽतिद्रिद्रस्य सेन्यन्ते के च भिक्षुभिः ॥ ६७ ॥

वीहाराः ॥ 'अहेः शत्रू' इति पाठे विश्व विश्व वी गरुडमयूरी । 'कौ शत्रू भुवि विख्याती' इति पाठे उश्व इश्व वी ईश्वरकंदपी । हा इति खेदे । राः द्रव्यम् । वीहाराः तीर्थम्मयः प्रासादाः देवायतनानि वा ॥

किं मुञ्चन्ति पयोवाहाः की हशी हरिवल्लभा। पूजायां किं पदं कोऽग्निः कः कृष्णेन हतो रिपुः॥ ६८॥

कंसासुरः ॥ कं जलम् । सा एन कृष्णेन सह वर्तमाना लक्ष्मीः । 'सुः पूजा-याम्' । रोऽग्निः । कंसासुरः कंसासुरनामा दैत्यः ॥

इति वर्णोत्तरजातिः। वाक्यमेव उत्तरं यस्मिन् तत् वाक्योत्तरं पृष्टम्॥

द्धौ हरिः कं शुचि कीहगभ्रं

प्रच्छत्यकः किं कुरुते सशोकः । श्लोकं विधायापि किमित्युदारः कविर्न तोषं समुपैति भूयः ॥ ६९॥

अगमकमकरोदिति॥ 'तिङ्खुवन्तचयो वाक्यम्' इत्यमरः। अगं गोवर्धनपर्व-तम्। न विद्यते कं जलं यत्र तत् अकम्। हे अक न विद्यते कं सुखं यस्य सःहे दुः-खिन्। रोदिति रोदनं करोति। अगमकमकरोदिति। एनं श्लोकं अगम्यं अकरोत् इति विचारयन् तुष्टो न भवति। इदं वृत्तं मयापि दुर्वोधम्॥

छक्ष्मीधरः प्रच्छति कीदृशः स्था-त्रृपः सपत्नैरिप दुर्निवारः । अकारि किं त्रृहि नरेण सम्यक् पितृत्वमारोपयितुं स्वकीयम् ॥ ७० ॥

समजनितनयः ॥ हे सम मा लक्ष्मीस्तया सह वर्तमानः हे लक्ष्मीधर । हे धनवन् वा । हे कृष्ण । जनितः कृतो नयो न्यायो येन सः जनितनयः । समजनि तनयः तनयः पुत्रः समजनि जत्पादितः ॥

इति वाक्योत्तरजातिः। इति द्वितीयः परिच्छेदः।

३ विद०

### तृतीयः परिच्छेदः।

श्लीक एवोत्तरं यत्र तच्छोकोत्तरमुच्यते ॥ १ ॥
श्लोक एवोत्तरं यत्र तत्र श्लोकोत्तरं पृष्टम् ॥
कं देवं केऽचियन्ति स्फुटकचि निशि किं किह्सी दुःखिनी स्त्री
कीह्वक्चकं सदास्ते क च तव विजयी प्रावृषं कीह्रशं खम् ।
कामाहुः प्रेतयोग्यां कथय सुकृतिनः कीद्रशाः स्युः पुमांसः
कं दत्ते कं च धत्ते गगनतलमलं प्रेक्षणीयं जनानाम् ॥ २ ॥

प्रक्षः की हक् चकास्ति स्फुटनवकु सुमाशोकमासाय कालं किं सुञ्चन्त्यम्बुवाहा भवद्रिनिवहे संब्वरः किंभवश्च। किं नेत्रप्रावृति स्याद्तिशयलघवः के च को ब्रीहिसेदः

प्रायेण प्रावृषेण्याः प्रियतमदिवसाः कीटशाः कीटशाः स्युः ॥३॥
अंजनाभमहावारिवाहोघिनिचिताम्बराः । कदंबकंदलीकंदरजःपक्मलवायवः ॥ अं कृष्णम् । जनाः लोकाः । मं नक्षत्रम् । नास्ति हावो मुखविकारो
यस्याः सा अहावा। अराणि विद्यन्ते यस्मिन् तत् अरि । वाहो हस्ते । घनो मेघोऽस्यास्ति
तत् घनि । चितां वराः श्रेष्ठाः । एकं कदं कं जलं ददाति सः कदो मेघस्तम् । द्वितीयं
वकं पक्षिणम् । दलानि पर्णानि विद्यन्ते यस्य सः दली । कं जलम् । दराद्भयाज्ञातो
दरजः । 'पक्ष्म स्यानेत्ररोमणि' । लवाः हस्कण्याः । यवो धान्यमेदः । अज्ञनाभमहावारिवाहोघिनिचताम्बराः । अज्ञनाभाः कज्ञलवर्णा ये महावारिवाहाः मेघास्तेषामोघेन समूहेन निचितं व्याप्तं अम्बरं आकाशं येषु दिवसेषु ते कदंवकंदलीकं
दरजःपक्ष्मलवायवः कदम्बानां वृक्षविशेषाणां कन्दलीकन्दानां च वनस्पतिविशेषाणां वा रजोमिः परागैः पक्ष्मलाः पुष्टाः वायवो येषु ते ॥

कुर्यादुद्वेगवन्तं कमि निशि सरः कीदृशं कास्ति वक्षे वक्ता निन्दाः कया स्थात्परिषदि नियतं मन्द्संवोधनं किम्। वर्णोपान्त्यं कम् चुः किमसुरिपुणा नन्दगोपालयेऽस्तं कः प्रालेयाद्रिपुत्रीकुचकलशलुठत्पाणिरेणाङ्कमौलिः ॥ ४॥ कीदृक्षस्थेद्द वन्धुः सुकृतमपह्रद्वेयसी (१) का युगान्ते कीदृग्मीतिं विधत्ते धनुरवनिरुद्दं कंचिद्रामञ्जयस्त । दैसः कंसद्विषा कः कथय विनिह्तो गद्गदः कः प्रतीतः कीदृक्षीदृग्वसन्तः प्रियतम भवतः प्रीतये निसमस्तु ॥ ५॥ कोकिलालापवाचालसहकारमनोह्रः । अशोकस्तवकालीनम-त्तालिमधुरस्वरः ॥ कोकि कोकाश्वकवाकाः पक्षिणो विद्यन्ते यसिन् तद् । ळाळा ळाळ इति प्रसिद्धम् । अपवाचा हीनवाण्या । हे अळस । हकारं मातृकायासु शवसह(ळ) इति हकारस्यान्त(स्योपान्स्य)लम् । अनः शकटम् । हरो रहः । अशोकः शोकरहितः भ्राता। तव भवतो भवति (१)। काळी संहारकर्भी देवी। नमत् नमनशीन् लम् । हे ताळि ताडनाम प्रसिद्धम् । मधुः मधुनामा दैसः। अखरः शब्देन रहितः। कोकिळाळापवाचाळसहकारमनोहरः कोकिळानां पिकानामाळापेनान्योन्यजलपनेन वाचाळाः सशब्दा ये सहकारा आम्रशृक्षास्त्रमेनो हरति सः। अशोकस्तवकाळीनमत्ता-ळिमधुरखरः अशोकानां वृक्षविशेषाणां स्तवके गुच्छे आळीना अभित्यासा ये मत्ता अळयो भ्रमरास्तेषां मधुरोऽतिमिष्टः खरो ध्वनिविशेषो यस्मिन्सः॥

इति श्लोकोत्तरजातिः। खण्डोत्तरं भवेदर्ध

खण्डमधेमेव उत्तरं यिसन् तत् खण्डोत्तरं पृष्टम् ॥
का चके हरिणा धने कृपणधीः कीहरमुजंगेऽस्ति किं
कीहकुम्भसमुद्भवस्य जठरं कीहरिययासुर्वधूः ।
ऋोकः कीहगभीप्सितः सुक्कतिनां कीहङ् नभो निर्मछं
क्षोणीमाह्नय सर्वगं किसुदितं रात्रौ सरः कीहज्ञम् ॥ ६ ॥

कुमुद्वनपरागरंजितांभोविहितगमागमकोकमुग्धरेखम् । कुमुद्
पृथ्याः हपाँऽकारि । पृथ्वी उद्धृता इत्यर्थः । अवनपरा अवनं रक्षणं धनस्य
गोपनं तत्र परा सावधाना । गरं विषम् । जितानि पीतानि अम्मांसि जलानि येन
तत् जिताम्मः । विहितगमा विहितः कृतो गमो गमनं यया सा । गमकः अर्थाभिप्रायेण गम्यते प्राप्यते सः गमकः । अकमुक् कं पानीयं मुद्धन्ति ते कमुचो
मेघाः न विद्यन्ते कमुचो यस्मिन् तत् । मेघै रहितमित्यर्थः । हे धरे हे पृथ्वि । खं
आकाशम् । कुमुद्वनपरागरंजितांभोविहितगमागमकोकमुग्धरेखं कुमुदानां चन्द्रविकासिकमलानां वनानि तेषां परागेण मुद्युगन्धेन किंजल्केन वा रंजितं रङ्गयुक्तं कृतं
अम्भो जलं यस्मिस्तत् ईदृशं सरः । प्रथमविशेषणम् । पुनः कीदृशम् । विहितौ निष्पादितौ गमागमौ गमनागमने याभ्यां तौ विहितगमागमौ तौ च तौ कोकौ च ताभ्यां
कुला मुग्धा मुन्दरा रेखा पङ्किर्यस्मिन् तत् यतस्तौ चक्रवाकीचक्रवाकावन्योन्यं वियुकौ सन्तौ रात्रौ मिलनाय तीरात्तीरं पर्यटतः । तयोगमनागमनेन जलरेखायाः भवात् रात्रौ सर ईदृशं इति भावः ॥

मुण्डः प्रच्छिति किं मुरारिशयनं का हन्ति रूपं नृणां कीटग्वीरजनश्च कोऽतिगहनः संवोधयाविश्वतम् । का धात्री जगतो बृहस्पतिवधूः कीटक्कविः काटतः कोऽर्थः किं भवता कृतं रिपुकुछं कीटक्सरो वासरे ॥ ७ ॥ इति खण्डोत्तरजातिः। विकचवारिजराजिसमुद्भवोच्छिलतभूरिपरागविराजितं। है विकच विगताः कचाः केशा यस्य सः तत्संबोधनम्। हे वालरहित । वारि जलम्। महाप्रलये हरिः शेषशय्यायां समुद्रजले शेते। जरा वृद्धलम्। आजिसमुत् आजा संप्रामे समुत् सहषः। भवः संसारः। हे अच्छिलत हे अविश्वत। भूः पृथ्वी। इप-रा इः कामस्तेन परा उत्कृष्टा निस्यौवनवती। गवि वाण्याम्। राः द्रव्यम्। जितं सुगमम्। विकचवारिजराजिसमुद्भवोच्छिलतभूरिपरागविराजितं विकचानां प्रफुहिन् तानां वारिजानां कमलानां राजिः पङ्कितस्याः समुद्भव उत्पन्न उच्छिलतो यो भूरिः प्रचुरः परागः सौगन्ध्यं तेन विराजितं शोभितम्॥

#### श्लोकात्पादात्तदुत्तरम् ।

पादः श्लोकचतुर्थोश एव उत्तरं यस्मिन् तत्पादोत्तरं पृष्टम् ॥ विभित्ते वदनेन किं क इह सत्वपीडाकरं कुळं भवति कीदृशं गिळतयौवनं योषिताम् । वभार हरिरम्बुधेरुपरि कां च केन स्तुते हतः कथय कस्त्वया नगपतेर्भयं कीदृशात् ॥ ८॥

विषमपाद्निकुंजगताहितः ॥ विषं गरलम् । अपात् न सन्ति पादाश्वरणा यस सः सर्पः । अनि नास्ति इः कामो यस्मिन् तत् अनि कंदर्परहितम् । कुं पृथ्वी-म् । जगता संसारेण । अहितः शत्रुः । विषमपादिनकुङ्गगताहितः विषमाणां दुर्गमाणां पादानां प्रस्मन्तपर्वतानां निकुङ्गेषु गहनस्थानेषु गता अहयः सर्पा यस्मिन् सः विषमपादिनकुङ्गगताहिस्तसात् यत्र पर्वते शिलाया अधस्तात्सर्पाः निर्गच्छन्ति ततः पर्वताद्विभीयते ॥

हरिर्वेहति कां तवास्त्यरिष्ठ का गता कं च का कमर्चयति रोगवान्धनवती पुरी कीटशी । हरिः कमधरद्वलिप्रभृतयो धरां किं व्यधुः कया सदसि कस्त्वया बुध जितोऽम्बुधिः कीटशः ॥ ९॥

कुंभीरमीनमकरागमदुर्गवारिः ॥ कुं पृथ्वीम् । सीः भयम् । ई लक्ष्मीः । अं विष्णुं गता । इनं सूर्यम् । अकरा नास्ति करो राजदण्डो यस्यां सा । अगं गोवर्धनप-वैतम् । अदुः ददति सा । गवा वाण्या वादेन कुलारिः प्रतिवादी जितः । कुम्भीरमीनम-करागमदुर्गवारिः कुम्भीरा नकाश्च मीना मत्स्याश्च मकराश्च कुम्भीरमीनमकरास्तेषां आगमौ आगमनगमने ताभ्यां कुला दुर्ग दुस्तरं वारि जलं यस्यासौ । ईदशः समुद्रो भवति ॥

#### इति पादोत्तरजातिः।

## चत्वार्यराणि पादाभ्यां नेमिं पादद्वयेन च । लिखित्वा दक्षिणावर्तं चक्रं प्रश्नमवेहि मे ॥ १० ॥

चकेण रथपादेन सहरां श्लोकवन्यं विधाय प्रश्नः क्रियते । इत्यतश्चकप्रश्नम् ॥ कं चौरस्य च्छिनत्ति श्लितिपतिरनयः किं पदं वक्ति कुत्सां श्लोणीसंबोधनं किं वदति कमलभूः का च विश्वं विभर्ति । चक्राङामन्त्रणं किं कथमपि सजनः किं न कर्योदनर्श

चक्राङ्गामत्रणं किं कथमपि सुजनः किं न कुर्योद्नार्ये कीटग्भोक्तः पुरं स्थात्पयसि वद् कुतो मीनपङ्किर्विभेति ॥११॥

किं खच्छं शारदं स्याद्वदति वृषगतिः कोंऽश्चमाली पवित्रः कोऽस्मिन्कं जीवनं कां विरचयति कविविह्निसंबोधनं किम्। नाकाङ्कन्ति स्त्रियः कं तनुरसुरिपोः कीहशी कश्च मूकः

सम्यक्प्रीतिं तडागः प्रियतम तनुते कीहशः कीहशस्ते ॥१२॥

करंकुकोककुररकलहं सकरंबितः । सरोजकोमलोद्गारनीरसंसक्तमारुतः ॥ करं इस्तम् । कुशब्दो निन्दार्थः । कुपुरुषः । हे को हे पृथ्वि । हे क हे
ब्रह्मन् । कुः पृथ्वी । हे अर 'आरा' इति लोकभाषा । कलहं वाग्युद्धम् । सकरं दण्डयुक्तम् ।
वितः वकादिपक्षिणः सकाशात् । सरस्तढागम् । हे अज हे शंभो । कः सूर्यः । अमलः
मलरिहितः । निर्मल इस्यर्थः । उद् उदकम् । गीः वाणी । हे र हे अमे । नीरसं निर्गतो
रसः श्क्रजारत्मको यसात् सः नीरसस्तम् । सक्तमा सक्ता लमा मा लक्ष्मीर्थस्यां
सा । अरुतः न विद्यते रुतं शब्दो जल्पनं यस्मिन्सः । करंकुकोककुररकलहं सकरंवितः । करंकवः पक्षिविशेषाथ कोकाथकवाकथ कुरराः कौधाथ कलहंसाः हंसिवशेषाथ एतैः पक्षिसमूहैः करम्वितो व्याप्तस्तढागः प्रीतिकरो भवेदिस्याश्चयः । पुनः
कीहशस्तढागः । सरोजकोमलोद्गारनीरसंसक्तमारुतः सरोजानां कमलोऽधिकसौरभ्यवान् य उद्गारः उद्गिरणं निःश्वाससदृशं यस्मिन् तत् । अर्थात्परिमलवत् यन्नीरं
जलं तेन सक्तो मारुतो वार्युर्थस्मिन् तढागे सः ॥

इति चक्रजातिः।

वर्णद्रयद्वयैकैकदलभूतदलाष्टकम् । सर्वोत्तराद्यवर्णेन पद्मं स्थात्कृतकर्णिकम् ॥ १३ ॥

भष्टदर्ह्मांहेन च सिंहतं पद्मं प्रश्नोत्तरम् ॥ पुण्यात्मा वद् कीदृशः सरिसजैः के मोदिताः कीदृश-स्त्वद्वेरी गतचक्षुषः कुलमभूत्कीदृक्तवया के जिताः । बद्धािकः सिंहलाशयः कथय भोः कीदृक्त आक्षेपवा-

क्शब्दः कुत्र न तस्करादिकभयं दत्ते भवेत्प्रायशः ॥ १४ ॥

अपित्तं गवि की हशं निगदितो मुक्तः पुमान्की हशः कसाद्विभ्यति कौशिका भुवि कृतः की हक्त्वया तस्करः। हस्ती स्थान्न की हशो बहुमतः शोच्यो रणः की हशः की हक्षः पुरुषः पराप्रतिहतः की हम्भवेद्वासुकिः।। १५॥

अलयः । अपरयत् । अरयः । अररे । अवन्धः । अहस्तः । अगजः । अहीनः ॥ अलयः ए कृष्णे लयो ध्यानिवशेषो यस्य सः । अलयो भ्रमराः । अपश्यत् 'शीङ् खप्ने' 'अद भक्षणे' शी शयनं अत् भक्षणं शीश्व अच श्यती अपगते श्यती शयनभक्षणे अस्यासी अपश्यत् । मच्छत्रः रात्रौ शयनं दिवसे चादनं न करोति । भयभीतलात् । न पश्यति विलोकयति तत् । अपश्यत् । अरयः शत्रवः । अरयः नास्ति रयो वेगो यस्य सः । अररे अरे इत्यर्थे अररे इति निपातः । अरे नीच हीन-संवोधने दीयते । अररे कपाटे । 'कपाटमररं तुल्ये' इत्यमरः । अर्थात् कपाटे दत्ते सति गृहान्तत्तरकरादेभयं न भवेदित्यमित्रायः । अवन्धः अपां पानीयानां अन्धो भक्षणं यस्य तत् सकारान्तः । नास्तिवन्धो रज्वादेवन्धनं यस्यासौ अवन्धः । वन्धनर्हित इत्यर्थः । अहस्तः दिवसात् । नास्ति हत्तौ यस्यासौ अहस्तः हस्ताभ्यां रहितः । अगजः अगेषु पवेतेषु जातोऽगजः पर्वतसंवन्धी । न विद्यन्ते गजाः हस्तिनो यस्मिन् सः अगजः । हस्तिरहिता सेना शोभां न लभते इत्यर्थः । अहीनः न हीनोऽहीनः । समर्थ इत्यर्थः । अहीनः व स्वीनां सर्पणां इनः स्वामी ॥

इति पद्मोत्तरजातिः।

काकस्येव पदं त्र्यस्रं यत्तत्काकपदं मतम्।

काकस्य पदं चरणाकृतिरिव व्यस्नं पदं आकारो यस्मिन् तत्काकपदं प्रश्नोत्तरम् ॥

कुतः कः स्यात्की हक्तथय विषवैद्य स्फुटमिदं

रिपोः कः की दक्षो भवति वशगः कश्च कलभः।

प्रवीणः संबोध्यः सुभग वद कौ रत्नवचनौ

सुरूपे विख्यातिं जगति महतीं का गतवती ॥ १६ ॥

नागद्रतः । नागतनयः । नागरमणी ॥ नागद्रतः नागानां सर्पाणां दरो भयं तसात्, ना पुमान् अगद्रतः अगदेषु विषापहारेषु औषघेषु रतः आसकः। अयमभिप्रायः—यदा नागेभ्यो भयं भनेतदा मनुष्योऽगद्रतो विषवैद्यः स्याजाङ्कः लीविद्याविशारदः स्यात् । कुतिश्वत्सर्पकीलनमन्त्रं पठेत् । ना पुमान् गतनयः गतः स्लक्षो नयो न्यायो नीतिक्षं येनासौ । नागतनयः नागानां हस्तिनां तनयः पुत्रः। हे नागर हे विचक्षण। मणी चन्द्रकान्तिप्रमुखौ हीरकौ । नागरमणी नागानां नागः कुमारदेवविशेषाणां रमणी स्री । तासां तौ सौन्दर्यविशेषेण श्वाष्येते ॥

काकपद्जातिः।

तिर्यगन्योऽन्यरेखामिर्गोमूत्रीं द्विपदी द्वये ॥ १७॥
गोर्वषभस्य मूत्रं वक्रगत्सा जायते तद्वद्वन्धो यस्याः सा गोमूत्रीप्रश्लोत्तरम् ॥

मामाहुर्युवतीममङ्गलवती की हम्प्रहाणां गतिः संवोध्या वद् मत्स्यवेधनपरः की हम्मवेत्पामरः । की हम्वाल्मिकवेशम को ऽस्तन सुरो धत्ते सुरेक्षच्यते गीः की हङ् न कदापि कम्बुरहितं वाञ्लान्त कं योषितः ॥१८॥ की हक्पान्थ कुलं तमो हरति का किं चक्रसंबोधनं रम्या चम्पकशाखिनः कथय का कश्चाटचो ऽर्थे भवेत् । किं क्षिमं वलिवेरिणा सुरिपोः काह्वा इमशाने ऽस्ति का क्ष्मा की हम्भवति सा पूर्वमधुना की हक्पुनवेर्तते ॥ १९॥

अजरामशुभाचारबिह्यीलिवनोदिता । भुजंगमिनभासारकिल-कालजनोचिता ॥ अजरां नास्ति जरा वृद्धत्वं यस्याः सा ताम् । अशुमा शुभकारिणी न भवित । हे चार हे गते । विलिशी विलिशमस्यास्ति सः । 'विडिशं मत्स्यवेध-नम्' इत्यमरः । लिव लवो नामा सीतारामयोः पुत्रः । लवो वियते यस्मिन् तत्त् लिव । ना पुमान् । उदिता उदयं प्राप्ता । यस्य पुरुषस्य यादश उदयो भवित तस्य तादशी देववाणी भवेदिति भावः । भुजं इस्तम् । गमिन गमनं चलनं पर्यटनं विद्यते यस्य तत् इनन्तः । भा कान्तिः । हे सार सह अरेस्तिर्यक्षाष्टविशेषवित्तमानं सारम् । तत्संबोधनम् । किलका कोरकः । अविकसितकलील्यधः । आलज् प्रस्यः । 'आलज्जाटची बहुभाषिण' । अनः शकटम् । हे अ हे कृष्ण । चिता प्रसिद्धा । अजराम-श्रुभाचारविलशीलिवनोदिता अजश्च रामधाजरामौ । अजो दशरथिता, रामध्य सीतापितः । तथोः शुभेन आचारेण । तथा विलराजा प्रसिद्धः वामनेन यो याचितः तस्य शीलेन आचारेण च विनोदिता हर्षं प्रापिता इति पूर्वमासीत् । अधुना कीदशी पृथ्वी । भुजंगमिनभासारकिकालजनोचिता भुजंगमैः सपैनिभासुल्याः विकरतयो येऽसाराः निःसलाः कलिकालजनाः कलियुगमनुष्यास्तेषां मनुष्याणामु-चिता योगया ॥

इति गोमूत्रजातिः। वर्णेनैकेन च द्वाभ्यां सर्वैर्वा सर्वदिग्गतैः। उत्तरं सर्वतोभद्रं दुष्करं तदिदं यथा॥ २०॥

सर्वतः समन्तात् वर्णस्रान्संगृद्य प्रश्नोत्तरं क्रियतेऽतः स सर्वतोभद्रं प्रश्नोत्तरम् ॥ कस्यागे धातुरुक्तस्तव रिपुहृदि का भूषणं के स्तनानां

को दुःखी कश्च शब्दो वदति वद् ग्रुचं कौ रिपू ख्यातवीयीं। शृङ्गारी कीदृशः का रणशिरसि भयाद्भङ्गमाप्रोति सेना

को दानार्थाभिधायी शिरिस शिरिस को युध्यतः संप्रहत्य ॥२१॥ कीटक्तोयार्थिनी स्त्री भवति मदकरः प्रायशः को दुराह्यः कस्मिन्मन्दायतेऽसो नियतमुडुपतिः प्रेयसी का मुरारेः। विख्यातौ वाहनौ कौ दुहिणमुरभिदोः कीहगाखेटकस्त्री

की हुडे वाचिराभा समिति गतभयाः के गतौ कश्च धातुः॥२२॥ हारावी ॥ कस्त्याग इति श्लोकद्वये एकोनविंशतिपृष्टानि सन्ति । हारावीत्यक्षरः त्रयेष्वेकोनविंशत्युत्तराणि ज्ञेयानि धीमद्भिः। हारावीत्यतएव हा इति 'ओहाक् साने' ॥ १ ॥ आरा 'आरा चर्मप्रमेदिका' चर्मकाराणां चर्मवेधनशस्त्रम् । शत्रुणां हि आरासदशं दुःखं वर्तते ॥ २ ॥ हाराः पुष्पाणां मुक्तानां च हाराः प्रसिद्धाः ॥ ३ ॥ अहावी न विद्यते हावो मुखविकारो यस्यासी अहावी । दुःखिनो जनस्य मुखे हावो हास्यादिविकिया न भवेदित्यमिप्रायः ॥ ४ ॥ हा हा इति खेदे ॥ ५ ॥ वी उश्व इश्व वी । उः ईश्वरः । इः कामः । ईश्वरानङ्गयोर्वैरंप्रसिद्धमेवास्ति । अनङ्गो हि रुद्रेण दग्धः ॥ ६ ॥ हावी मुखविकियाहास्यादियुक्तः ॥ ७॥ अवीरा वीरैः सुमटैः रहिता। अवीरा सेना भनिक ॥ ८॥ रा 'रा दाने' रा इखयं घातुर्दानेऽस्ति ॥ ९ ॥ अवी मेषो ऊर्णायू ॥ १० ॥ श्लोकः ॥ अवीहा अप्सुजले ईहा वाञ्छा यसाः सा अबीहा ॥ ११ ॥ राः द्रव्यम् ॥ १२ ॥ राही विधुंतुदे प्रहे ॥ १३ ॥ ई लक्ष्मीः ॥ १४ ॥ वी विश्व विश्व वी पक्षिणो । हंसगरुडाविखर्थः । ब्रह्मणो वाहनं हंसः कृ ष्णस्य वाहनं गरुड इति प्रसिद्धम् ॥ १५ ॥ वीहा विषु पक्षिषु ईहा वाञ्छा यस्याः सा ॥ १६ ॥ वीरा विगता इरा जलं यस्यां सा वीरा । जलरहिता न भवतीत्यर्थः ॥ १७ ॥ वीराः योद्धारः ॥१८ ॥ 'हा ओहाङ् गतौ' ॥ १९ ॥ एते सर्वेऽप्यर्थाःहारा वीखेतेन्वेव वर्णेषु भवन्खत एव सर्वतो भवतीति सर्वतोभद्रं नाम यथार्थम् ॥

इति सर्वतोभद्रजातिः। प्रतिलोमानुलोमाभ्यामुत्तरेण गतागतम्। मध्यवर्णविलोपेन तचानेकप्रकारकम् ॥ २३ ॥

गतं च प्रसागतं च गतप्रसागते ते विद्येते यस्मिन् तत् गतप्रसागतं प्रश्नो त्तरम् ॥

वद् वह्नभ सर्वत्र साधुर्भवति कीदृशः । गोविन्देनानसि क्षिप्ते नन्द्वेद्दमनि काभवत् ॥ २४ ॥

श्लीरनदी ॥ अनेकप्रकारकं भवति । श्लीरनदी एतच पदं प्रतिलोमं वाच्यम्। प्रतिलोमो वामवाचना, अनुलोमो दक्षिणवाचना च । दीनरक्षी इत्येवं स्यात् । असा यमर्थः । दीनान् दुःस्थान् भिक्षाचरादीन् रक्षत इत्येवंशीलो दीनरक्षी । दीनपाळ इत्यथः । श्लीरनदी श्लीरं दुग्धं तस्य नदी जाता । द्वितीयवारं अनुलोमं वाच्यम् ॥

यत्नाद्निष्य का प्राह्मा छेखकैर्मसिमछिका।

घनान्धकारे निःशङ्कं मोद्ते केन बन्धकी ॥ २५ ॥

नालिकेरजा ॥ नालिकेराज्ञाता नालिकेरजा । नालिकेरफर्ल प्रसिद्धम् । तः क्षसक्तपत्रान्तःशलाकाया लेखनी समीचीना भवेत् । एतदेव प्रतिलोमं वाच्यते। जारकेलिना । उपपतिस्तु जारः स्यात् । जारेण सह केलिः क्रीडा तया ॥

असुरसुरनरेन्द्रैरुह्यते का शिरोभिन स्ततुरिप श्चिवको कातिविस्तारमेति । वद्ति कमल्योनिः सेन्यते केन पुष्पं मधुरमसृणमृद्वी का भवेद्धत्पलस्य ॥ २६ ॥

मालिका ॥ माला एव मालिका । पुष्पादिमाला देवानां बिरिस शाश्वती भव-लेव । तदेव प्रतिलोमं वाच्यम् । कालिमा रयामता । उच्चवे वस्ने मधीविन्दुरूपापि वहुविस्तारं प्रामुयादिति भावः । कालिना । हे कहे ब्रह्मन् । अलिना भ्रमरेण । तदेव प्रतिलोमं वाच्यम् नालिका । नाली एव नालिका नालं । इदं च प्रश्नचतुष्टयं मन्था-नाकृत्या लिखिला वाचनीयम् । तथा कृते मध्यस्थो लिकारश्चतुरो वारान् वाच्यते ॥

> हिमांग्रुखण्डं कुटिलोज्ज्वलप्रमं भवेद्वराहप्रवरस्य कीदशम्। विहाय वर्ण पदमध्यसंस्थितं

न किं करोत्येव जिनः करोति किम् ॥ २७ ॥

दंष्ट्रामं ॥ दंष्ट्रा दाढा दंष्ट्रावत् आमा शोभा यस्य तत् । अथवा दंष्ट्रा इव भाति दीप्यते तत् । द्वितीयायामुदयं प्राप्तश्चन्द्रो वकोक्चकणुणेन स्करदंष्ट्रया सहोपमी-यते । दंष्ट्राभमिस्त्रत्र मध्यस्थः ष्ट्रा इति वर्णस्यज्यते । पश्चाद्रतप्रस्यागतरीस्या वा-च्यम् । तच्च दम्भिति स्यात् । जिनो दम्भं कपटं न करोति । विपरीतवाचनया भंदिमिति स्यात् । जिनो भन्दं कल्याणं करोति । 'भिद कल्याणे'। एवं मध्यस्थि-तवर्णलोपेन गतप्रस्यागतं दर्शितम् ॥

वसन्तमासाद्य वनेषु कीदृशाः पिकेन राजन्ति रसालभूरहाः । निरस्य वर्णद्वयमत्र मध्यमं तव द्विषां कान्ततमा तिथिश्च का ॥२८॥

कांतिगरा ॥ कान्ता मनोहरा गीर्वाणी यस्यासौ कान्तगीः तेन कान्तिगरा । अत्रोत्तरमध्यादनुस्वारः । अयं हि मन्थानाकृतिचित्रवन्धः । मन्थानं 'रवाइनुंफूलं' इति भाषा तस्य कृतिराकारः तद्वचित्रवन्धः । तकारगिकाररूपं वर्णद्वयं स्वक्वा वाच्यम् । कारा वन्दिगृहम् । वामवाचनया राका । 'राका पूर्णे निशाकरे' । पूर्णे मासे जातत्वाद्राका पूर्णमासी । अनेकप्रकारकं दर्शितम् ॥

इति गतप्रत्यागतजातिः।

आदौ मध्ये तथान्ते वा वर्धन्ते वर्णजातयः । एकद्वित्रादयो यत्र वर्धमानाक्षरं हि तत् ॥ २९ ॥

वर्धमानानि अक्षराणि यस्मिन् तत् वर्धमानाक्षरं प्रश्नोत्तरम् ॥

किमनन्ततया ख्यातं पादेन व्यक्तमाह्नय । जनानां छोचनानन्दं के तन्वन्ति घनात्यये ॥ ३०॥ खंजनाः ॥ खं आकाशम् । आकाशस्य सर्वत्र वर्तमानत्वादन्तो नास्ति । हे खंज हे खोड । खंजनाः मध्यदेशे पोदनो नाम पक्षिविशेषः खंजन उच्यते । अत्र त्वेककाक्षरपृद्धा उत्तरत्रयं कृतम् ॥

डरःखलं कोऽत्र विना पयोधरं विभर्ति संबोधय मारुताशनम्। वद्न्ति कं पत्तनसंभवं जनाः फलं च किं गोपवधूकुचोपमम्।।३१॥ नागरंगं ॥ ना पुमान् । हे नाग हे सर्प । नागरं नगरे भवो नागरस्तम्। नागरंगं नारंगीफलम् । अत्रैकैकाक्षरबुद्धा प्रश्नोत्तराणि द्रष्ट्यानि ॥

प्रायेण नीचलोकस्य कः करोतीह गर्वताम् । आदौ वर्णद्वयं दत्त्वा त्रृहि के वनवासिनः ॥ ३२ ॥ श्वादाः ॥ राः द्रव्यम् । शवराः भिल्लाः । इति पश्चादक्षरप्रदानेनोत्तरं दर्शितम्॥

सानुजः काननं गत्वा कीकसेयाञ्जवान कः। मध्ये वर्णत्रयं दत्वा रावणः कीदृशो वद्।। ३३॥

राक्षसोत्तमः ॥ रामः दाशरिथः। एतस्य एवोत्तरस्य राकारमकारयोर्मध्ये त्रीः ण्यक्षराणि क्षसोत्त इति लिखित्वा वाच्यम्। राक्षसोत्तम इति स्यात्। राक्षसानं मध्ये उत्तमः श्रेष्ठः। इत्येवं मध्ये वर्णप्रदानेन वर्धमानं दर्शितम्॥

धत्ते वियोगिनीगण्डस्थलपाण्डुफलानि का । वद् वणी विधायान्ते सीता हृष्टा भवेत्कया ॥ ३४ ॥

लवलीलया ॥ लवली लताविशेषः । अस्यैवोत्तरस्यान्ते वर्णो द्वौ लया इति कृत्वा वाच्यम् । लवलीलया लवो नाम पुत्रस्तस्य लीला कीडा तया । इत्येवमन्ते वर्णप्रदानेन वर्षमानं दर्शितम् ॥

विष्णोः का वद्यभा देवी छोकत्रितयपाविनी । वर्णीवाद्यन्तयोर्दत्वा कः शब्दस्तुल्यवाचकः ॥ ३५॥

समानः ॥ मा लक्ष्मीः । एतस्यैवादौ सकारोऽन्ते नकारश्च एतौ वणौ दल वाच्यम् । समानः तुल्यः । इत्येवमादावन्ते च वर्णप्रदानेन वर्धमानं दर्शितम्।

इति वर्धमानाक्षरजातिः ।
आदितो मध्यतोऽन्ताद्वा हीयन्ते वर्णजातयः ।
एकद्विज्यादयो यत्र हीयमानाक्षरं हि तत् ॥ ३६ ॥
हीयमानानि अक्षराणि यस्मिन् तत् हीयमानाक्षरं प्रश्लोत्तरम् ॥
वसन्तमासाद्य वनेषु राजते विकाशि किं वह्नभ पुष्पमुच्यताम्।
विहंगमं कं च परिस्फुटाक्षरं वदन्ति कं पङ्कजसंभवं विदुः॥३॥

किंशुकं ॥ किंशुकः पलाशः । खाखरो । किंशुके भवं किंशुकम् । केसूडफूठ । अत्र तदेव आदिमवर्णपरिहारेण वाच्यम् । शुकं कीरं । शुकपक्षी शुद्धं वदिति । अ त्रापि द्वितीयस्थापि वर्णस्य स्थागेन वाच्यम् । कं ब्रह्माणम् । विष्णोर्नाभिकम् । ब्रह्मा जातः । कशब्दो ब्रह्मवाचकः प्रसिद्धः ॥ समुद्यते कुत्र न याति पांसुला समुद्यते कुत्र भवं भवेजलात्। समुद्यते कुत्र तवापयात्यरिः प्रहीणसंबोधनवाचिकं पदम् ॥ ३८॥

हिमकरे ॥ हिमकरे चन्द्रे उद्गते सति उद्योतलादन्यत्र यातीति दृश्यते अतो न याति । तद्विधानां तासां लन्धकार एव समीचीनः । उक्तोत्तरमध्यात् हि इति प्रथमाक्षरलागेन कृत्वोच्यते । मकरे मकरे मत्स्ये उत्पन्ने सति । द्वितीयाक्षरलागेन वाच्यते । करे हस्ते सायुधे कर्ध्वांकृते सति शत्रुर्भज्यते । तृतीयाक्षरलागेन वाच्यते । रे 'रे दास' इति चामच्चणे । एवमादित एकैकाक्षरहान्या हीयमानं दर्शितम् ॥

तपिस्तिनोऽत्यन्तमहासुखाशया वनेषु कस्मै स्पृह्यन्ति सत्तमाः। इहापि वर्णद्वितयं निरस्य भोः सदा श्चितं कुत्र च सत्वसुच्यताम् ३९

तपसे ॥ तपोगुणाय । तपिखनां हि तप एव प्रियं भवति । वर्णद्वयत्यागात्मे इत्यविष्यते । सकारभावः सकारे वर्तते । अत्राक्षरद्वयहान्या हीयमानाक्षरोदाहरणं दिश्तिम् ॥

पुरुषः कीट्यो वेत्ति प्रायेण सकलाः कलाः । मध्यवर्णद्वयं त्यक्त्वा बृहि कः स्थात्सुरालयः ॥ ४० ॥

नागरिकः ॥ नागरिकः नगरिनवासी चतुरो वा । एतस्यैव मध्यात् गरीति वर्ण-द्वयं सञ्यते तदा नाक इति स्यात् । नाकः स्वर्गः । अत्र मध्यवर्णद्वयहानिर्दर्शिता ॥

यजमानेन कः खर्गहेतुः सम्यग्विधीयते । विहायाद्यन्तयोर्वणौं गोत्वं कुत्र स्थितं वद् ॥ ४१ ॥

यागविधिः ॥ यजनं यागः यज्ञो दानं वा तस्य यथाप्रोक्तकरणं विधिः होमदानविधिरित्यर्थः । यागविधिरित्येतन्मध्यात्प्रथमान्तिमवर्णं सञ्यते तदा गवि इति तिष्ठति । गविज्ञान्दे गोत्वं वर्तते । एवमायन्तवर्णयोस्सागेन हीयमानाक्षरं दर्शितम्॥

इति हीयमानाक्षरजातिः।

अन्योन्याक्षरवर्तिन्या चैकान्तरतयाथवा । शक्कावन्ध इत्युक्तः

श्रृङ्खलाया इव शृङ्खलाकारेण वन्धो रचनाविशेषः शृङ्खलावन्धः इति प्रश्नोत्तरम्। पवित्रमतितृप्तिकृत्किमिह् किं भटामन्त्रणं

व्रवीति धरणीधरश्च किमजीर्णसंबोधनम् । हरिर्वदति को जितो मदनवैरिणा संयुगे

करोति ननु कः शिखण्डिकुलताण्डवाडम्बरम् ॥ ४२ ॥

पयोधरसमयः॥ पयो जलम् । पाश्वाखवर्णसागात् अभेतनवर्णप्रहणेन वाच्यते । हे योध । अत्र पकारस्स्यक्तः । अत्रेतनधकारो गृहीतः । पाश्वास्यरीसा हे धर हे पर्वत, हे रस हे अजीणं । पर्वतं प्रति अजीणंसंबोधनं उक्तम् । हे सम म लक्ष्मीस्तया सह वर्तमानः समः तत्संबोधनं हे हरे । मयः मयो नामा कश्विहैस्यिन शेषो हरेण हत इति भावार्थः । पयोधरसमयः पयोधरस्य समयः कालः । मेघागमे हि मयूरा विशेषेण नृस्यन्ति ॥

भवति जयिनी काजौ सेनाह्वयाधरभूषणं वहति किमहिः पुष्पं कीटकुसुम्भसमुद्भवम् । महति समरे वैरी वीर त्वया वद किं कृतः

कमलमुकुले भृद्धः कीद्दिगवन्मधु राजते ॥ ४३ ॥

परागरंजितः ॥ परा उत्कृष्टा । हे राग । पूर्ववदत्रापि पाश्वासो वर्णस्स्रज्यः तेऽप्रेतनो गृह्यते । ग्रग आरक्तसम् । अधरस्य आरक्ततेव प्रशस्यते । गरं गर्हं रेजि रंजतीत्येवं शीलं तत् रंगयुक्तं । 'रंज रागे' । जितः सुगमम् । परागरंजितः परागेण केसरेण रंजितः प्रीणितमनाः । लोहमयश्र्व्वलाकटकवत् अन्योन्यमक्षराणि संकल्पन्तेऽतः श्रृङ्खलाजातिः ॥

इति श्रृङ्खलाजातिः।
आह्वानं किं भवति हि तरोः कस्यचित्प्रश्नविज्ञाः
प्रायः कार्यं किमपि न कलौ कुर्वते के परेषाम्।
पूर्णं चन्द्रं वहति नतु का पृच्छति म्लानचक्षुः
केनोदन्याजनितमसमं कष्टमाप्रोति लोकः॥ ४४॥

नीरापकारेण ॥ नीरापकारेणे सिने काक्षरपरिहारेण । अत्र द्वितीयो रा इति वर्णः परिसाज्यते । हे नीप हे दृक्षविशेष । प्राग्वदेकान्तरितवर्णप्रहणेन परे अने आसमः कार्याणि सर्वे कुर्वन्ति । परकार्यकृषु विराजः । राका पूर्णिमा । अत्र पूर्वे वर्णाः परिसाक्तास्त एव योज्यन्ते । हे काण एकाक्ष । सर्वे रेवाक्षरेः नीरापकारेण नीरस्य जलस्य अपकारः अभावस्तेन । नीरं विना तृवा कष्टं ददाति ॥

का संबुद्धिः सुभट भवतो त्रूहि पृच्छामि सम्यक् प्रातः कीद्रग्भवति विपिनं संप्रवृद्धैर्विहंगैः । छोकः कस्मिन्प्रथयति सुदं का त्वदीया च जैत्री

प्रायो लोके स्थितिमह सुखं जन्तुना की दशेन ।। ४५ ॥ वीहारसेविना ॥ हे वीर । अत्रापि प्राग्वदेकान्तरिता एव वर्णा गृह्यन्ते। रिव रवः शब्दो विद्यते यस्मन् तत् रिव शब्दयुक्तम् । स्यक्ताक्षरसंयोजनया उत्तरं कर्तव्यम् । हासे हास्ये । सेना सैन्यं । वीहारसेविना वीहार उपवनादिषु खेळनं देवा यतनं जिनालयं वा वीहार सेवते इस्यंशीलो वीहारसेवी तेन । अथवा वीहारसे सेवा विद्यते यसासो तेन । वीहारसेवायुक्तेन मनुष्येण सुखमनुभूयत इस्यंः। एकान्तरितवर्णमहणेनात्र श्रङ्खलावन्यस्य द्वितीयो भेदः ॥

इति एकान्तरितश्रङ्खलाजातिः।

ग्रन्थिमान्नागपाशकः ॥ ४६ ॥

्र प्रन्थिमान्नागपाशकः यस्मिनागपाशवन्धे प्रन्थिर्वध्यते सः प्रन्थिमान् । नागानी सर्पाणां पाशवन्ध एव नागपाशकः प्रश्लोत्तरम् ॥ गोष्ठी विद्ग्धजनवत्यि शोचनीया कीट्ग्भवेत्तरणिरिइम् का सदास्ति । दुर्वारद्पेद्छितामरनायकापि कीट्ययकारि सुरश्त्रुचमूगृहेण ॥ ४७॥

तारकिवरिहता ॥ प्रथमाक्षरद्वयत्यागेन वाच्यते । कविरिहता कविना पण्डिन्तेन रिहता । अन्त्याक्षरद्वयत्यागेन पथादानुपूर्वा वाच्यते । रिवकरता रवेः सूर्यस्य करता किरणभावः । अत्र प्राक् किवरिहतित्युत्तरं कृता पश्चात् रिवकरता इत्युत्तरं कृतम् । एवं किवरिव एतयोर्मध्ये वि इति वर्णो नागपाशवद्धः । तत् वद्धत्वं च वन्धद्रक्षेनां क्षेत्रेयं प्रश्नार्थविद्विद्विद्विति । तारकिवरिहता तारकनामा दैत्यस्तेन विरिहता वियुक्ता कृता ॥

की हक्परैक्पहतो भवति क्षितीशः पृच्छत्यनुच इह किं विदितं पवित्रम्। विच्छित्रपाणिचरणो जनको यदीयः

की हक्परैर भिहितः स पुमान्पुनः स्यात् ॥ ४८ ॥

द्यंगतनयः॥ अत्राप्येकाक्षरपरिहारेण वाच्यते। गतनयः गतस्यक्तो नयो न्यायो येनासौ अन्यायी राजा। अन्याक्षरैकत्यागेन पश्चादानुपूर्या वाच्यते। हे नत हे अप्रांशो वामन, गव्यं गोरिदं गव्यं गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दिघ सिर्पः इति पश्च। व्यङ्गतनयः। विगतानि अङ्गानि हस्तादीनि यस्यासौ व्यङ्गस्तस्यायं तनयः पुत्र इत्युच्यते परेः। अत्रापि गतनत एतयोर्मध्यस्थप्रकारो प्रन्थिगत्या वाध्यतेऽत एव नागपाशःनागपाशजातिरिति॥

इति नागपाशजातिः।

भाषाभिश्वित्रितं यत्स्यात्संस्कृतप्राकृतादिभिः। सन्तश्चित्रं तदिच्छन्ति संशुद्धं त्वेकभाषया।। ४९॥

संस्कृतप्राकृतादिभिभीषाभियंचित्रितं रचितं स्यात् तत्पृष्टं चित्रं नाम । 'संस्कृतं प्राकृतं चैव सौरसेनी च मागधी । पैशाची चाप्यपभ्रंशः षड् भाषा विद्युधैः स्मृताः'॥

> किं न स्थात्कीदक्षं महतोऽपि च तादशस्य जलराशेः। दिणमणिकिरणप्फंसणपडिबुज्झं होइ किं गोसे ॥ ५०॥

कमलवणं ॥ कं पानीयं अलवणं लवणं क्षारसस्तेन रहितं न भवति । समुद्रस्य जलं क्षारमेव भवेत् । सप्तानामपि समुद्राणां मध्ये प्रथमो लवणसमुद्रः । 'लवणक्षीः रदध्याज्यसुरेक्षुखादुवारयः' इति सप्त समुद्राः । इति संस्कृतेन पृष्टं संस्कृतेनोत्तरं दत्तम् । अथ प्राकृतेन पृच्छति प्राकृतेनेवोत्तरं ददाति—दिणमणीति । अथ संस्कृतं लिख्यते 'दिनमणिकिरणस्पर्शनप्रतिसुद्धं भवति कि प्रातः' इति । उत्तरम्—कमळवणं कमः स्वानं वनम् । वणमिति प्राकृतभाषा ॥

४ विद्•

मत्स्यहितमम्बु की दृक्पृच्छिति रोगी निशासु किं भाति । कोऽनङ्गो वदति मृगः खे गम्मइ केरिसा रइणा ॥ ५१॥

अविसामभिरेण ॥ अवि न विद्यन्ते वयः पक्षिणो यस्मिन् तत् पक्षिरहितम्। वकादिपक्षिणो मत्स्यान् घनित । हे साम हे सरोग । आमो रोगस्तेन सहवर्तमानः वकादिपक्षिणो मत्स्यान् घनित । हे साम हे सरोग । आमो रोगस्तेन सहवर्तमानः तत्संबोधनम् । भं नक्षत्रं । हे एण हे मृग । इः कामः अनङ्गः । अप्रे प्राकृतरीखा वोच्यते—खे गम्मइ केरिसा रइणा। अस्य संस्कृतम्—आकाशे गम्यते कीदशेन सूर्येण इति । उत्तरम्—अविसामभिरेण अविश्रामश्रमिणा । अविश्रामा विश्रामरिता अमिर्श्रमं यस्य स तेन । अमिश्वन्दस्य भिर इत्यादेशः प्राकृतभाषायाम् । विश्रामर् इति प्रमाणशीलः सूर्यो गगने भ्रमन्न कुन्नापि तिष्ठतीति तात्पर्यम् । इति संस्कृतयुक्तान्त्रतिहरणम् ॥

इति संस्कृतप्राकृतजातिः।

प्रायो विभ्यति की हशादि राजाइन्तप्रही ना गजाः
पृथ्वी संप्रति की हशी नृपतिना राजन्वती राजते ।
प्रायः प्रावृषि की हशी गिरितटी धत्ते च कः कञ्जले
मञ्झने चलिए घणू अशिदणे जादं सरो केरिसं ॥ ५२॥

सरदादवताविद्वाहिरं ॥ सरदात् रदाभ्यां दन्ताभ्यां सहवर्तमानः सरद्द्धः सात् निर्दन्तेन गजेन सदन्तहस्तिना सह योद्धमशक्यमिति भावः । अवता 'अव रह्षः पाळने' अवतीखवनः तेन अवता रक्षता । विद्वा विगतो द्वो वनविद्ययां सा अहिः शेषनागः । अं विष्णुं । अप्रे अपभ्रंशभाषया मज्झते इत्यादि । अस्य संस्कृतम्-मध्याहे चित्रते घनात्ययदिने जातं सरः कीदशम् । उत्तरम्—सरदादवताहितम्-वाहिरं । शरदातपतापितं वाह्यं । शरद आतपेन तापितं वाह्यं वहिर्मांगो यस्य तत्।

कृत्तं कीटशमङ्गं दन्तभमं कं वदन्ति विद्वांसः । अतिरुघुवाचि पदं किं फेरिसु सुयणेसु होइ जणो ॥ ५३॥

विस्तंतमणु ॥ विसं 'प्तिगन्धस्तु दुर्गन्धो विसं स्यादामगन्धि यत्' इसमरः। प्तिगन्धमदिस्यर्थः । तं तकारं 'स्तुलसानां दन्ताः' इति वचनात्तकारो दन्सः । अष् स्तोकं वा । अणुः परमाणुः । अप्रे चतुर्थपादेऽपश्रंशभाषा । केरिसु इति । अस्य संस्थितम्-कीदशः स्वजनेषु भवति जनः । उत्तरम्—विसंतमणु विश्रान्तं विश्वस्तं मने यसासौ । इति संस्कृतयुक्तापश्रंशोदाहरणम् ॥

इति संस्कृतापभ्रंशजातिः। किं सुखमाहुः प्रायः केशविकारं च का हरेदेयिता।

कथमाभा कस्मिन्निशि को छचइ वीलपुलिशाणं ॥ ५४ ॥

शामलकंमालंभे ॥ शं मुखं अलकं 'अलकाथूर्णकुन्तलाः' इत्यमरः । मा लक्ष्मी अलं अतिशयेन मे नक्षत्रे । अतःपरं मागधीभाषा—को लुचइ वीलपुलिशाणमिति । अर्थ संस्कृतम्—को रोचते वीरपुरुषेभ्यः । उत्तरम्–शमलकंमालंमे समरकर्मारम्मः। समरस्य संयामस्य कर्म कार्यं तस्य आरम्भः । वीरपुरुषाणामिष्टो भवति । 'वीरपुरि' साणम्' इति चतुर्थ्यथे षष्टी । मागधीभाषायां सकारस्य शकारः । तथा रेफस्य छकार इति भावः ॥

कः स्तम्बेरमसुत इति विख्यातः पृच्छति स्फुटं हरिणः। अहिणवणयलीलन्नो असाहुणो केन उज्जुडइ ॥ ५५॥

कलभएण ॥ हे एण हे मृग । कलभः हस्तिपुत्रः । 'द्वात्रिंशद्वार्षिको हस्ती कलभः' इति । अत्रोत्तरार्धे मागधीभाषा-अहिणवेति । अस्य संस्कृतम्-अभिनवनगरीलोको-ऽसाधोः केन स्रजति ॥ उत्तरम्-कलभएण करस्य दण्डस्य भयेन राज्ञो दण्डभयेन । लोका उज्जडन्ति न पश्यन्तीसर्थः । इति संस्कृतयुक्तमागधीभाषोदाहरणं दर्शितम् ॥

इति संस्कृतमागिष्ठकम् । कोपारुणं किमरुणाग्रसरस्य पूर्व-काष्ठाग्रनिष्ठिततनोरुपमानपात्रम् । पत्तं खणेण मरणं सअरस्स रण्णं पुत्तेहि किं पविसिडण्ण तुरंगमत्थं ॥ ५६ ॥

किएलपनं ॥ कपिलपनं कपेर्मर्केटस्य लपनं मुखम् । कपिवदनमप्यारकं भवति । अस्र पैशाची भाषा—पत्तमिस्यादि । अस्य संस्कृतम्—प्राप्तं क्षणेन मरणं सगरस्य राज्ञः पुत्रैः प्रविशक्तिरिह किं च तुरङ्गमार्थम् । उत्तरम्—कपिलपनं कपिलनाम्न ऋषेन्वेदनं तत्प्रति प्रवेशं कुर्वद्भिस्तैः तत्क्षणात् एव मरणं प्राप्तमिस्यर्थः । कपिलपिमस्तत्रं पैशाच्यां वनशब्दस्य आदिवकारस्य पकारत्वेन श्रवणात् पनमिति स्यात् ॥

कं प्रीणयन्ति जलदाः सैन्यं कीद्दक्पलायते समरात्। धत्ते शिरोधरा किं रुद्दिशं केरिसं होइ॥ ५७॥

चातकंकातरंकं ॥ चातकं वप्पीहं । कातरं भीरं । कं मस्तकं । चतुर्थपादे पैशाची—रहेति । अस्य संस्कृतम्—रुद्रशिरः कीदशं भवति । उत्तरम्—चातकं-कातरंकं जातगंगातरंगं जाता उत्पन्नाः गङ्गायास्तरङ्गा छहयों यस्मिन् तत् । रुद्रस्य शिरसः सकाशादेव गङ्गा निःसरति । अत्र पैशाच्यां जकारस्थाने चकारः गकारस्थाने ककारो दर्शितः । इति संस्कृतयुक्तपेशाचीभाषोदाहरणं दर्शितम् ॥

इति संस्कृतपैशाचिकम्। को वर्णाद्यः क जलधिसुता कं च दीर्घादिसंज्ञं प्राहुर्बुद्धाः कमजयदसौ तार्किकैः के क्रियन्ते। आमन्त्र्यो विः कथय विदितं किं पदं हेतुवाचि जा णची ए इमइ महिसा सावि बोलेड किसे॥ ५८॥

अएचम्मारंवादावेहि ॥ अः अकारः मात्रिकायां द्विपञ्चाशद्वर्णेषु खराणां मध्ये प्रथमोऽकारः खर एवास्ति । यथा अइउण्, ऋछक्, इखादिषु पाठः । ए अः शब्दः कृष्णवाचकस्तस्मिन् ए कृष्णे । चं चकारं । मारं कंदर्पं। प्रायो जिनेनैव कंदर्पे जितः । जिनस्य सर्वथापि स्त्रीसङ्गो नास्ति । अत एवेदमुक्तम् । वादाः अन्योन्यं

संस्कृतजल्पनादिशास्त्रकलहाः । हे वे हे पक्षिन् । यतोऽधः अतोप्रे लौकिकभाषा— जाणचीए इति । अल्यार्थः जाया महिला स्त्री हि णची नर्तयितुं ए एख इमइ आयाति सावि अपि निश्चितं कीसे कीहक् वोह्नेइ जल्पति । उत्तरम् अएचम्मारं बदावेहि । अए इति आमन्त्रणे । चम्मारं ढोलम् । वादावेहि वादय । अस्य संस्कृतम्—अये मृदङ्गं वादय । अहं नर्तयामि । त्वं वाद्यं वादयेति जल्पन्ती आगच्छेत् ॥

शब्दः कः स्थात्पुरुषवचनं कुण्डली की स्मरारेः कामाम्भोधेहरिरुदहरद्वीवधः पृच्छतीदम् । हांडी कुण्डी अणिसि नरडा कीस अह्यार एत्थं जो पुच्छिल्ला स पुण परिहारुत्तरं कीस देइ ॥ ५९॥

नाहीकुंभार ॥ ना पुमान् । अही सपों । कुं पृथ्वी । हे भार । अप्रे लौकिकः भाषा—हांडी कुंडी इसादि । नरडा इति नरसंबोधनम् । अ ब्रह्मार । एत्थमस्मदर्थां । हांडीकुंडी लोकभाषा । हंडिकाः भाण्डानि कुंडिकाः कुण्डानि । कीस कथम् । अणिहि नानयि इस्ते जो पुच्छिल्ला यः पृच्छेत् । तस्य स पुण सः श्रोता तं पुनः परि हारत्तरं प्रत्युत्तरं कीस देइ कीहक् ददाति । अस्या एकीभूतं संस्कृतम् । हे नर, अस्दर्थं हंडिकाः कुंडिकाः कथंचन आनयि एवं यः पृच्छेत् तस्य सः श्रोता तं प्रति पुनः प्रत्युत्तरं कीहक् ददाति । उत्तरम्—नाही कुंभार नास्ति कुंभारः कुंभकारं विन भाण्डानि कृत आनयामीत्युत्तरं दीयते । इति संस्कृतयुक्तलौकिकभाषोदाहरणं दिश्तिम् ॥

इति संस्कृतलौकिकं। इति चित्रजातिः। एकमाषायाः संग्रदं प्रश्लोत्तरम्—

को निवसइ सच्छंदं सुंदर गिरिगहणकुंजमन्मि । सह अजुणेण जोज्झुं शिहिगमणो केरिसो होइ ॥ ६० ॥

सरभससवराहवग्गो ॥ अथ ग्रुद्धप्रकृतम्—को निवसइ इति । व्याख्या— हे सुन्दर सुभग, गिर्रगहने पर्वतस्य किटने कुझमध्ये खच्छन्दं खेच्छ्या को निव सित । उत्तरम्—समग्रेण । सरभससवराहवग्गो शरभा अष्टापदाः, शशाः प्रसिद्धाः, वराहाः सूकराः, तेषां वर्गः समूहः । कुझे निलीनस्तिष्ठति । 'निकुझकुझौ वा क्षिरे लतादिपिहितोदरे' इखमरः । तथा सह अञ्जुणेणेति । शिखी मयूरो गमनं यस सः शिखिगमनः कार्तिकेयोऽर्जुनेन सह योद्धं युद्धं कर्तुं कीहशो भवति । उत्तरम्— तैरेवाक्षरैः । सरभसाः वेगवन्तः ईहशाः ये शवराः भिष्ठास्तैः सार्धं आहवे संप्रामे गच्छतीति आहवग्गः आहवाम्योगामी वा ॥

> का हरइ मणं पइणो गुणगणजुन्त्रणशलाहणिजुस्स । कयचडचडत्ति सद्दा हूयासा केरिसा हुंति ॥ ६१ ॥

सरिसवहुया ॥ का हरइ इति । गुणानां गणेन समूहेन यौवनेन च श्राध्यस च पुनरार्थस्य श्रेष्ठकुळे जातस्य । आर्येपुत्रस्थेलर्थः । ईदशस्य पद्गो पत्युर्मनः ब हरति । उत्तरम्—सरिसवहुया सहशी समानवयोगुणा वधुका सुषा भर्तुमैनो हर-तीति भावार्थः । तथा कयचड इति । कृतः चटचटदिति शब्दो यस्ते हुता अग्नयः क्रीहशा भवन्ति । उत्तरम्—तैरेवाक्षरैभिन्नार्थेन । सरिसवहुया सर्षपैर्हुताः । सिद्धार्थेर्हुतो हुताशनश्वटचटायते चटचटशब्दं कुरुते ॥

इति गुद्धप्राकृतम्। पाणिग्गहणणियंसणु सोहइ कहिं मंडिउं। साहसबदुवि वीर पइरिपुबछं केहिं खंडिउं॥ ६२॥

समरंगणेहिं ॥ अथ ग्रुद्धापश्चेशी भाषा दर्शते—पाणिगहणेति । पाणिप्रहणस्य विवाहस्य निवसनं वस्नं कैर्मण्डितं शोभितम् । उत्तरम्—समानरङ्गकरणेः तुल्यरङ्ग-प्रदानेन । तथा हे वीर साहसवदुवि साहसेन युक्तमि प्रतिरिपुवछं सैन्यं कैः कृला खण्डितं छेदितम् । लयेति शेषः । उत्तरं तदेव । समरंगणेहिं संप्रामाङ्गणेः मया वैरिवछं भग्नमिति भावार्थः ॥

रसिअह केण उचाडण किजाइ जुयइह माणसु केण उविजाइ। तिसिय छोउ खणि केण सुहिजाइ एह पहो मह सुत्रणे विजाइ॥ ६३॥

नीरसराएण ॥ रसिअह केण इति । रसिकानां गृङ्गारादिनवरसिवज्ञानाम् । अथवा श्रीरागादिषदित्रिंशद्रागरसिवज्ञानाम् । केनोचाटजुद्धिप्रचित्तता कियते । उत्तरम्—नीरसराएण नीरसक्षासौ रागश्च नीरसरागस्तेन । दुःखरेण रसिका उद्विजन्ति उद्वेगं प्राप्तुवन्तीखर्थः । तथा युवलाः नवयौवनायाः स्त्रिया मानसं चित्तं केनोद्धिज्यते । उत्तरम्— नीरसरागेण नीरसेन शृङ्गारादिरसरिहतेन यो रागः संबन्धस्तेन । अथवा निर्गतो रसो वलं पुरुषार्थत्वं वा नीरसो वृद्धः तस्य रागेण । युवलै तु वृद्धो न रोचते । तथा वृषितो लोकः क्षणं क्षणमात्रं स्तोककालं केन सुखी कियते । उत्तरम्—नीरश्चरावेण नीरस्य जलस्य श्रावः पात्रं कोश्चिका तेन । कोश्चिकाप्रमाणमपि जलं तृषितस्य क्षणं सुखयति । तथा एहपहेति । एतदयं मम प्रश्नः सुवने केन गीयते । जगन्त्रितयमध्ये गीयत इल्प्यः । उत्तरम्—नीरसरागेण नितरां रसो नीरसः, विशेषेण रसयुक्तो रागः सौकण्ट्यं यत्रासौ नीरसरागस्तेन । अतिसुकण्ठरागेण मम गृहे गीयत इल्प्यः । एवमस्यार्थचतुष्टयं ज्ञायते ॥

इति शुद्धापभ्रंशम्।

सुयलो मेहं पुच्छइ मेहो विश्र तं तहा सुयलं। केण हया सयलसुया केण जणो विसइ पायालं॥ ६४॥

वलाह्कविलेण ॥ अथ गुद्धमागधीमाषामाह—पुत्रले मेहिमिलादि । गुकरो मेषं पुच्छति । तथा मेषोऽपि तं ग्रुकरं पुच्छति । उभयोः प्रश्नमाह—सगरपुताः सगरचकवर्तिनः पुत्राः केन हता इति ग्रुकरेण मेषः पृष्टः । मेषः कथयति उत्तरम् । बलाह कविलेण हे वराह हे ग्रूकर, किपलेन ऋषिणा। तथा मेघः ग्रूकरं पृच्छिते— केण जणो विसद पायालं जनो लोकः पातालमधोलोकं केन विशति। ग्रूकरः कथ-यति। उत्तरम्—हे वलाहक हे मेघ, बिलेन भूमिद्वारेण। भूमिद्वारेण पाताललोके प्रविश्यते॥

.. धवलुज्जलेहिं केहिं सोहइ धरणी मसाणदेसस्स । नरयस्स रचाइं नाकहिं समप्पतिनिहितं कताइपि ॥ ६५ ॥

नलकलंकेहिं ॥ धवल जलेहिमिति । स्मशानदेशस्य धरणी पृथ्वी धवलोज्वलैः कैः शोभते । उत्तरम्—नलकलंकेहिं नराणां मनुष्याणां करंकेरस्थिपद्वरैः । अत्र रकारस्थाने लकारः । तथा नरकस्य रक्षपालाः कैः परिवेष्टिता भवन्ति । तैरेवाक्षरैः नरकस्य रंकैर्वराकैः ॥

इति शुद्धमागधिकम्। वेरी पुचिद ककने रायित कसनो घनो किहेंख। कचाई ना किहें समप्पति निहितं कताई पि॥ ६६॥

अहितपक्खेहि ॥ अथ शुद्धपैशाची भाषोच्यते—वेरी पुचिद इसादि । वैरी पृच्छित कृष्णः श्यामो घनो मेघो गगने आकाशे कैः कृसा राजति इति पृष्टे उत्तरम् — अहितपक्खेहिं हे अहित हे शत्रो, पक्खेहिं पक्षीहिति । संस्कृतं पिक्षिभिरिति । वलाकाप्रश्वतिपिक्षिभिः शोभते । तथा कचाई इति निहितं निश्चितं कृतान्यि कृसानि कार्याणि केर्न समाप्यन्ते । अयं भावार्थः—संजातमि कार्यं कैर्मङ्गमापयते न समाप्यते समाप्तमावं नापयते । अत्रोत्तरम्—तदेव । अहितपिक्षिभिः शत्रुपक्षीयैरेवार्थाः भज्यन्ते ॥

पत्तून किं फटचनो निचतेहताना अत्थासनं फचित चंफिनसूतनस्स । भोत्तून खोरतरतुक्खसताइ पावा मोहान्धकारगहनं छप किं छफिनत ॥ ६७॥

विसमरणं ॥ पत्तन किमिलादि वसन्तितिलकाच्छन्दः। अस्य भाषाश्लोकस्य संस्कृतिलोको लिख्यते—प्राप्याथ किं भटजनो निजदेहदानादधीसनं भजित जम्मनिषूद्वन्स्य । भुक्ला च घोरतरदुःखशतानि पापा मोहान्धकारगहनं वद किं लभनते ॥ भाषा—श्लोकस्य व्याख्या—फटचनो भटजनः निचतेहताना निजस्यात्मनो देहस्य दानात् किं पत्तून किं प्राप्य चंफनिसूतनस्स जम्भनिषूदनस्य इन्द्रस्य अत्थासनं अर्धासनं फचित भजित इत्येवं शब्दार्थः । उत्तरम्—विसमरणम् । विषमं च तत् रणं संप्रामध विषमरणं तत् विषमरणम् । रणशब्दो नपुंसकलिकेऽप्युक्तः । कठिनसंप्रामं प्राप्य योद्धा इन्द्रस्याधीसनं सेवते । संप्रामे देहदानात् स्वर्गप्राप्तिरिति पौराणिका वदन्ति । तथा पावा पापाः । खोरतरदुक्खसताइ घोरतरदुःखशतानि भोत्तून भुक्ला मोहान्धकारगः हनं मोहो अञ्चानमेवान्धकारस्तेन गहनं निविडं किं फलिन्त किं प्राप्तुवन्ति । है

विद्वन्, त्वं लप वद । अयमर्थः —पापिनो घोरं दुःखं भुक्ला लन्ते किं फलं लभन्ते । उत्तरम् । विसमर्णं विषेण मर्णं नाशं विषमरणम् । पापिनोऽन्ते विषं भुक्ला स्निय-न्तेऽयमिम्रायः ॥

#### इति शुद्धपैशाचिकम्।

जा नीयाणइ निंदे भिंभला सा किसि वुचइ बोह रे संभिल । जो तिलसरिसव पीडइ जाण किसि भणिज्ञइ सोवि न्नाणी ॥६८॥ सुतेही ॥ अथ गुद्धलौकिकभाषामाह—जा नीयाणइ इलादि । या स्त्री निद्रया भिंभला व्याकुला किंचित नीयाणइ न जानाति संभिल हे सिख । इति श्रुला प्रश्लोत्तरलं बोह रे वद । सा किसि वुचइ सा कीहशी उच्यते । उत्तरम् । सुतेही सा सुतेशित्यता उच्यते । तया जो तिलसरिसव यो ज्ञात्वा तिलांश्व सर्षपांश्व पीडयित चाणियन्त्रेण तैलादि निष्कासयित सोवि नाणी सोऽपि ज्ञानी शिल्पिकः कीहकू भण्यते उच्यते । अत्राप्युत्तरम्—सुतेही । 'घूसरश्वािककरतेली' इति वचनात् । लोके 'घांची-तेली' इति नाम प्रसिद्धम् ॥

इति ग्रुद्धलौकिकम्। इति संशुद्धजातिः॥

एतावतापि दिङ्मात्रं प्रश्नानां दर्शितं मया। येन येन हि माद्यन्ति तद्विदस्तत्तद्व्यताम् ॥ ६९ ॥

इति तृतीयः परिच्छेदः।



चतुर्थः परिच्छेदः।

व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थे खरूपार्थस्य गोपनात् । यत्र बाह्यान्तरावर्थी कथ्येते ताः प्रहेलिकाः ॥ १॥ प्रहेलिकानाम पृष्टम् ।

सा द्विभार्थी च शाब्दी च विख्याता प्रश्नशासने । आर्थी स्यादर्थविज्ञानाच्छाब्दी शब्दविभागतः ॥ २॥ तरुण्यालिङ्गितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रितः । गुरुणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः ॥ ३॥

पानीयकुम्मः ॥ सा द्विधा आर्था शाब्दी च । द्विप्रकाराया उदाइरणम् । क्षो-कोक्तिविशेषणैरुपेतः सः कः स्यात् हे विद्वन्, त्वं ब्रूहि किमुत्तरं दातव्यं विचार्यता-मिति । एवं विशेषणानां भावे विचार्यभाणे ईदशो युक्त्या भती झायते । भतीपि तरुण्या सोत्कण्ठमालिङ्ग्यते । तथा कान्ताप्रियो भती उभयथापि नितम्बस्थाने गुद्यप्रदेशे तिष्ठेत् । तथा च गुरूणां मातृपितृश्वश्रूश्वग्रुरजनानामप्रेऽपि स्त्रियं कामयते । इत्येवम-भिप्रायेण बाह्योऽर्थः । आभ्यन्तरस्तु पानीयकुम्मः । सोऽपि कूपसरोवरादो जलेन भृत्वा शिरस्यारोपणसमये तरुण्या हस्ताभ्यामालिङ्ग्यते । प्राणाद्पि कान्तः प्रियः कक्षानितम्बस्थाने च गृह्यते । गुरूणां वृद्धचटानामुपर्युपविश्य कूजति वडवडायते अतो घट एवायं निश्वयीकृतः इत्येवमान्तरार्थः केनापि न झायते । एवमर्थस्य द्वैविष्यं दर्शितम् ॥

आपाण्डु पीनकठिनं वर्तुछं सुमनोहरम् । करैराक्वष्यतेऽत्यर्थे किं वृद्धैरपि सस्पृहम् ॥ ४ ॥

पक्कविल्वफलम् ॥ यत् श्लोकेनोक्तं तत् कि । हे श्लोतः, त्वं ब्रूहि । उत्तरम्-प्रकटमावेन क्रियाः कुचयुगलमिति ज्ञायते । आन्तरार्थस्तु पक्कविल्वफलमिति । इति वाह्यान्तरार्थयोर्भेदेन आर्था प्रहेलिका ॥

इत्यार्थी जातिः।

दुर्वारवीर्य सरुपि त्वयि का प्रसुप्ता इयामा सपत्नहृद्ये सुपयोधरा च । तुष्टे पुनः प्रणतशत्रुसरोजसूर्ये सैवाद्यवर्णरहिता वद नाम का स्थात् ॥ ५ ॥

रास्त्री ॥ शत्री छोहस्य छुरिका स्थामवर्णा छोहमयत्वात् । सुष्ठु पयो जलं घरित सा । छोहेषु पानीयं दीयते । पुनः सा एव शत्री आद्यवर्णेन शकारेण रहिता सती त्री इति तिष्ठति । कीदशी स्त्री । स्थामा षोडशवार्षिकी । सुपयोधरा सुष्ठु पयोध्ये स्त्रों वस्ताः सा । ईदशी स्त्री त्विय दुष्टे सित शत्रूणां हृदयोपिर खेळते शेते वा । इत्येवंशब्दस्य विभन्नादक्षरस्य छोपात् द्वावर्थी कृतौ । अत एव शाब्दी प्रहेळिका ॥

सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता नितान्तरकापि सितैव नित्यम् । यथोक्तवादिन्यपि नैव दूतिका का नाम कान्तेति निवेदयाशु ॥६॥

सारिका ॥ पुनरन्यप्रकारेण शब्दभाजनां दर्शयति — सदारिमध्येति । व्याख्या — है कान्त हे प्रिय भर्तः, त्वं आशु शीघ्रं इति पूर्वोक्तं निवेदय कथय । सा का नाम स्यात्। या सदा सर्वेदा अरीणां मध्ये स्थितापि वैरिमिर्युक्ता न शत्रुमिर्युक्ता न वि-द्यते। 'न वैरयुक्ता' इति पाठे वैरेण विरोधेन युक्ता नास्ति। एवं विरोधाभासः। उत्तरम्-सारिका । अत्रैवं विरोधपरिहारेऽथों विधेयः । शारिका इति शब्दमध्ये अरिशब्दः वारिकारो वर्तते । परं कैश्चित्सार्धं वैरं नास्ति । पुनश्च या नितान्तं अतिशयेन रक्ता रक्तवर्णापि नित्यं सिता श्वेतैव सा सिता कथमुच्यते । अत्रापि विरोधः । अत्रापि विरोधपरिहारेऽयमर्थी विधेयः। रकारककारयुक्तापि सितैव सकारेण इता युक्ता सिता । सारिका इलात्र सकाररकारककारवर्णाः सन्ति । कान्ता इति श्लोके कृते कान्तो यस्याः सा कान्ता । सारिका इति शब्दे अन्ते का इति वणो विद्यते । कान्ता कामनीया मनोहरा वा इलेनं विशेषणत्रयोपेते सति सारिका इति शब्दः । 'रमवानी सोंगटी' इति भाषा घटते । कथम् । अरीणां रमणवतां मध्ये स्थितापि कैश्चित्सार्ध वैरं नास्ति । परं सा उपरिभागे रक्ता अधोभागे श्वेता परं कान्ता सुन्दरा इति । तथा यथोक्तवादिन्यपि दूती नैव भवति यथा उच्यते तथा वदति । मरं दूती सा न । अत्रापि विरोधः । दूतीधर्मस्त्वीदश एव सारिका तु पापठ्यमाना यथोक्तं पठति परं दूती न भवति । एषा सारिका कथ्यते । पोपटी कावरी इति भाषा । इयमपि शाब्दी प्रहेलिका ॥

#### इति शाब्दी जातिः।

नीरस डण वहुगुणवंतउ भमइ निरंतर निच्च हुंतु । तरुगिगिज्जिणड पछुपत्रुतसु जो परिजाणइ पविसोजगिजसु ॥७॥

गुणवृकः ॥ अथ लैकिकभाषया शाब्दीं प्रहेलिकां दर्शयति— नीरस इति । व्याख्या—नीरसः कः पुनर्वहुगुणवान् वर्तते । यो नीरसः सः गुणवान् कथमिति विरोधः । उत्तरम्-गुणवृकः । 'गुणवृक्षस्तु कृपकः' गुणैर्दवरकैर्वद्धो वृक्षो गुणवृक्षः । प्रसिद्धभाषया 'वहाणनो कुवायंभ' सः च नीरे जले शेतेऽसौ नीरशयः । वा निर्गतः रसो यस्मात् सः नीरसकः । अतिग्रुष्कलात् बहुमिर्गुणैर्दवरकैर्ययते । अतो बहुगुणवान् । तथा भमइ निरंतरं निलं अमित परं निश्वलः सन् तिष्ठति । यश्वलन् सः निश्वलः कथं भवेदिति विरोधः । अत्रापि वाहनेन अममाणेन सार्थं अमित । आत्मना त्वेकत्रैव तिष्ठति । तथा तक्रवृक्ष इति गीयते कथ्यते परं फलपत्रे न स्तः गुणवृक्ष इत्युच्यते फलं च पत्रं च न भवति । जो परिजाणइ यो नरोऽस्यार्थस्य परीक्षां सभावं जानाति स पुमान् बहुयशः प्राप्नोति इस्रक्षरार्थः ॥

घरि घरि चिह्न सयलिपयारी जीवंती वेरयरी साहो नारी। खणि बम्भइ खणि भुच्चि खणि एकली तह जाणसु वेह जाइ नी पिल्ली ८ पाशासारी ॥ घरिघरि इति । व्याख्या—एहे एहे त्रजति प्रतिएहं याति परं सक्छजनप्रिया सा नारी जीवति यदा तदा वैरकरी विरोधकारिणी भवेदिति शेषः । क्षणेन बध्यते क्षणेन मुच्यते तथा जानीथ यूर्य यथा क्षणेन एकाकिनी प्रेरिता सती नो याति । उत्तरम्—पाशासारी पाशकसारिका वन्धनद्वरकेण युक्ता पोपटी काविया भाषा । अथवा रमावाना पाशासहित सोंगटी इति भाषा । सा च पाशासारी एहे एहे काष्टादो तजित । यत्रैव याति तत्रैव प्रिया । सा च यावजीवति तावत् कीडाकर्तुंवैरकरी दुःखदायका त्रियमाणा सुखाय स्थात् । क्षणेन वध्यते चिलतुं न शकीति क्षणेन मुच्यते चलति एतदीसार्थद्वयं जातम् । इति शाब्दी लौकिकभाषा ॥

इति प्रहेलिकाजातिः।

कालसारादिकं हृद्यमजमारादि गृढकम् । विदग्धो दुर्विग्धानां क्रुरुते दुर्पशान्तये ॥ ९ ॥

कालश्च सारश्च कालसारों तो आदी यस्य तत्कालसारादिकं हृदि भवं हृद्यं नाम पृष्टम् ॥

अनुनेतुं मानिन्या द्यितश्चरणे सरागचरणायाः । यावत्पतितः स तया तत्क्षणमवतारितः कस्मात् ॥ १० ॥

कालहर्यं ॥ कालो रजखललादिदिनं अवगम्यते । अस्यायं भावः — कालस्य व सारस्य च ज्ञानं हृदये स्थाप्यते पश्चारप्टच्छयते । अतएव ह्यमिति पण्डितरिप दुःखे-नावबुध्यते ईदशया स्लोकोक्तयानया क्षिया यो दियतो द्रीकृतः । सः कसात्केन हेतुना। हे विद्वन्, त्वं ब्रूहि इति पृष्टम् । अत्र हेतुर्वक्तुईदयस्थोऽप्यतुक्तेन ज्ञायते धीम. द्विरिप अतएव ह्यम् । अत्र हेतुमाह — रजखललात् स्लीधमत्वात् । अहमस्प्र-द्यासीति मां मा स्पृशेति विज्ञायावज्ञातो निजद्यितह्यो भावः स्लोकमध्येन भवति रजखलाकालो ह्य इति ॥

अवलोक्य स्तनौ वध्या गुञ्जाफलविभूषणौ । निःश्वस्य रोदितुं लग्ना कुतो व्याधकुटुम्बिनी ॥ ११ ॥

सारहृद्यं ॥ एतच रोदनं तया कुतः कृतमिति प्रष्टव्यम् । हृद्योऽयं भावः गजा-दिवधे समर्थोऽयं मुक्ताफलानां हारं परिधापयेदिति पुत्रस्य गजादिवधेऽसमर्थत्वं विज्ञाय तया कुटुम्बिन्या वधूकुचावालोक्य निःश्वस्य च रुदितम् श्लीणवल्दवेन निजपुत्रस्यासमर्थत्वं विचारितम् । स्तनयोरारक्तत्वेन वध्वाः नवयोवनत्वं चिन्तित-मिस्याकृतम् । पुत्रस्य असारतो रोदनहेतुः । स तु हृद्यः प्रष्टुह्दयस्थः कथनं विना न ज्ञायते । इति सारहृद्यम् ॥

इति कालसारजातिः।

द्रदिहचूयमडलं पिच्छिय सिंह याहि विरिहणी सिंहयम् । निमें कंकेलितरू चूउं चरणाहदो कत्तो ।। १२ ॥ रागद्वेषहृद्यं॥ लौकिकभाषया अन्यदिष ह्यमेव दर्शयति—दरिहेति। व्याख्या चूतसामस्य मुकुलं पुष्पोद्गमं ईषत् दृष्ट्वा काचित्सखी विरहिणी सती सख्याः संमुखं पृश्यति । सखीं प्रति द्शैयिला कंकेलितहरशोकृष्ट्यः शिरसा प्रणतः । चूत्थरणेन्वाहृतः । तत्कृतः इति वो विचारणीयः भावोऽयं गूृृृृृः । अत्र भावः श्लोकमध्ये लिखितो नास्ति । किंतु हृदि वर्तते । स चायम् । आम्रे मुकुलदर्शनादिरहिण्या विरहो दीपितः । ततो दुःखं कृखा आम्रस्तया चरणेन हृतः । तथा कंकेलितहरप्रफुल्लितलात्खसदशः प्रणतोऽयं हेतुर्शयते । यस्याः भाषार्याया अर्थान्तरं लिख्यते । ईषत् दृष्ट्वा चूत्मकुलं विरहिणीं सखीं प्रेक्ष्य सखीभिरशोकृष्ट्यो निमतः । चूतः पादान्हृतः । तत्कस्माद्धेतोः । अशोके पुष्पिते सति सख्या प्रियः समेष्यति । अतः कारणात्प्रणतः । चूत्दर्शने सति अस्याः स्मरकृष्टं जातमिति कारणात् हृतः । इति रागद्वेषहृत्यम् ॥

पिच्छन्तमणिमिसच्छं पिच्छिय वहूकया झतिति सिक्खयरं। दंसिय कयाई सीसे कत्तो दो जाइकुसुमाई ॥ १३॥

अन्यच ह्यं कथयति लैकिकमापया—पिच्छन्तमिलादि। व्याख्या—कयानिद्वधू-कया अनिमिषाक्षं निमेषरहितनेत्रं ईदशं प्रेक्षन्तं निलोकयन्तं कंचन भिक्षाचरं भिक्षुकं पिन्छिय दृष्ट्वा झटिति शीघं तया द्वे संख्ये जातीक्रुग्रमे जपापुष्पे तं भिक्षुकं दशेषि-ला खशीषें कृते मस्तके धृला तस्मै द्शिते। कत्तो तत्कृतः कस्माद्धेतोरित्युच्यतामिति प्रष्टव्यम्। अत्राप्येवं हृयम्। भिक्षाचरेण सा मया सम्नदं निलोकिता तया तु जाती-कुष्रमयोश्चस्थाने धारणेन निजजातिरेतत्कुप्रमवदुज्वनला। उभयपक्षविद्यद्वासम्यहं लयोग्या नास्मीत्युत्तरं दत्तम्। अकार्थं नैव कर्तव्यम्। अयं भावोऽस्ति॥

इति कालसारादिहृद्यजातिः।

रविसुतकृतगोकणः श्रुतिविषयगुणाम्बरो वनात्मधरः । नरकशिरा जगद्खिछं चिरमव्यादसमरुक्पाणिः ॥ १४॥

अजगूढकम् ॥ अजमारादिगृढकम् । अजश्र मारश्राजमारौ तौ आवी येषां तेऽजमारादयः पदपादार्थाः ते एव गूढाः गुप्ताः यिसन् तत् अजमारादिगृढकम् । अस्यायं
भावः—अजः शंभुस्तद्वाचीशब्दो गूढो यिसन् तत् अजगूढम् । मारः कामः स एव
गूढो यिसन् तत् मारगूढम् । विभक्त्यन्तं पदं तदेव गूढं यिसन् तत्पदगूढं । श्लोकस्य
चतुर्थो भागः पादः स एव गूढो यिसन् तत्पादगृढम् । अर्थः शब्दार्थः स एव गूढो
यिसन् तत् अर्थगृढम् । इति पश्च पृष्टानां उदाहरणानि वक्ष्यति । असमरुक्पाणिः ।
न समोऽसमो विषमः स चासौ रुक्चासमरुक् शूलरोगः । त्रिशूलमिलायुथविशेषः ।
सः पाणौ हस्ते यस्य सः शूलपाणिभेद्दादेवः । एवमेतन्नामगुप्तं ज्ञापितम् । त्रिपादोकर्गूढार्थविशेषणरजो महादेवो वर्णितः । इति अजगूढकम् ॥

इयमेका जातिः।

कुधेनसुप्रीनयनाश्रयाशदग्धोन्मदा दर्दुरहर्षकाले । स्वजन्ममक्षप्रियभोजनाशा नृत्यन्ति भीमानुजगोजभाजः ॥१५॥ अत्र विशेष्यपदं गूढम् खजन्मभक्षप्रियमोजनाशाः इति, विशेष्यपदं खसाजन्म येषां तानि खजन्मानि खापस्यानि तानि भक्षयन्ति ते खजन्मभक्षाः सपीस्ते एव प्रियाः मोजनस्य आशाः येषां ते ईदशाः मयूराः इति मयूरनामगोपितम् । दर्दुर-हर्षकाळे दुर्दुराणां मण्ड्कानां हर्षकाळो वर्षाकाळस्तस्मिन् इति वर्षानाम गोपितम् । किंभूताः मयूराः । कुं पृथ्वीं घरन्ति ते कुष्टाः पर्वतास्तेषामिनः खामीः हिमाचळ-स्तस्य सूः पुत्री पार्वती तां प्रीणातीति प्रीमहादेवस्तस्य नयनस्य आश्रयाशो नेत्रव-स्तस्य सूः पुत्री पार्वती तां प्रीणातीति प्रीमहादेवस्तस्य नयनस्य आश्रयाशो नेत्रव-हिस्तेन दग्घो यः कामस्तेन उन्मदा उन्मताः । अत्र मारस्य नाम गोपितम् । इति मारगूढम् ॥

इयमप्येका जातिः।

वाताच्छीतिरिधोऽरं वो हरतान्महासुरीद्यितः । वीडाब्राज्यानौका वार्वाहाभोसमस्तानाः ॥ १६॥

अथ क्षेपकः स्होकोऽयं। व्ययवासाः पञ्चिशिराः यरिवीनारिभूषणः। असिरोमा क्रियादुर्वः शङ्कालायनवीक्षणः॥ १७॥

अत्र गूढार्थयोजना वर्तते । महासुरीद्यित इससात् ईद्यित इति विशेष्यपद-गुप्तं भृतमस्ति । अत्र क्रियादुवे इस्यसाद्वाक्यात् उरिति विशेष्यं गूढम् ॥ इति पद्गूढम् ॥ पद्गूढम् ॥ पद्गूढं ।

> द्यावान्प्रयतः शुद्धः प्रबुद्धः कमलेक्षणः । पापापहिश्वभुवनं बुद्धः पायाद्पायतः ॥ १८॥

अत्र बुद्धः पायात् इति चतुर्थः पादः पूर्वेषु त्रिषु पादेषु गुप्तोऽस्ति । कोऽर्थः-चतुर्थपादस्य वर्णाः प्रथमद्वितीयनृतीयपादेष्वन्तर्गोपिताः सन्ति । सम्यग्विचार्ये विलोकितन्याः ॥

न मज्जित कचिद्दोषे प्रीणाति जगतो मनः । य एकः स परं श्रीमान् चिरं जयति सज्जनः ॥ १९॥

अत्रापि चतुर्थः पादो गूढः चिरं जयति सज्जन इति पाश्वासित्रिषु पादेषु गोपितोऽस्तीति विचार्यं सद्भिर्देष्टव्यः ॥ इति पादगूढम् ॥

पादगूढं। इयमप्येका जातिः।

दृष्टी मया सखि ब्रृहि रोद्यित्वा गतोऽद्य माम् । भद्रे कल्याणिनी भूयाः प्राचीं पद्य विनिर्मेछाम् ॥ २०॥

अत्र भावः कः । यथेयं प्राची निजमर्तुः सूर्यस्य विरहेण रात्रौ दुःखितापि अधुना सूर्योदये विकसिता सशोभा जाता तथा लमपि भर्तुरागमे विलासं प्राप्ससीति भावः सख्या ज्ञापितः ॥ दाहिणपवणुन्विग्गा सम्मीछइ छोयणाई पहियवहू । निडणसही डण तीए कण्णविवरेहिं ढक्केहि ॥ २१॥

दाहिण इति । व्याख्या—काचित्पथिकवधूर्दक्षिणपवनेनोद्वित्रा व्याकुलीकृता सती
लोचने संमीलयति आच्छादयति । तदा च तसा निपुणसखी प्रवीणवयसा तस्याः
पथिकनार्याः कर्णयोर्विवरे छिद्रे अङ्गल्या ढक्षयति । मुद्रयतील्पर्थः । तत्सख्या कर्णाच्छादनं कस्मात्कृतं इत्यर्थो गूढविचारणीयः । तचैवं तया दक्षिणपवनमसहमानया
निजनेत्रे मुद्रिते । सख्या च विरहिणीलान्मा कदाचित्कर्णमार्गेणास्या जीवो व्रजेदित्यतस्याः कर्णो पिहिताविति भावः । अथ पाठान्तरम् । पथिकवधूर्लोचनानि संमीलयति । किंभूता । दक्षिणपवनोद्विमा निपुणसखी पुनस्तस्याः कण्ठमपि इस्तैच्छादयति ।
तत्कथम् । सा कण्ठगतप्राणा अहमेवं मन्ये । अन्यथास्याः कण्ठात्प्राणाः गमिष्यन्ति ॥

अर्थग्र्ढं । इति ग्रुढजातिः। स्तुतिनिन्दातदर्थत्वाद्वयर्थमर्थद्वयोदयात् ।

निह्ववात्कथितस्यापि शब्दव्याजादपह्नुतिः ॥ २२ ॥

सुतिश्व निन्दा च सुतिनिन्दे । ते विद्येते यस्यां सा सुतिनिन्दाजातिः । द्वौ अर्थो यस्मिन् तत् द्वर्थे पृष्टम् । कथितस्यार्थस्य शब्दकपटेन मिथ्याभाषणात् अपहु-तिरिति नामजातिः । एषां त्रयाणामुदाहरणानि मूलप्रन्थे सरलानि भवन्ति ॥

बहुदोषो गुणध्वंसी गोहन्ता जनपीडकः । करोतु विरथो छोकमस्तमाप्तमहोदयम् ॥ २३॥ विष्णोः स्तुतिनिन्दे ।

सततमहितजनवत्सळबहुभयपापिकयापरिश्रष्टः ।

इह कलिकाले कुपतिर्जगतस्त्वं परमदुःखकरः ॥ २४॥

राज्ञः स्तुतिनिन्दे । इति स्तुतिनिन्दाजातिः । प्रसन्नवद्नः श्रीमानयं रुष्धमहोदयः ।

करप्रचारसभगो राजा नन्दयति प्रजाः ॥ २५ ॥

चन्द्रभूपती।

विनायकाहितप्रीतिर्देवो गङ्गां बभार यः।

सर्वदोमाधवः स त्वामन्यादन्यर्थविक्रमः ॥ २६ ॥

हरिहरौ।

इति द्यर्थजातिः।

सीत्कारं शिक्ष्यित व्रणयत्यधरं तनोति रोमाञ्चम् ।

किमु नागरिको मिलितो नहि नहि सखि हैमनः पवनः ॥२७॥
५ विद॰

हिनरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति । तर्दिक तहणी निह निह वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य ॥ २८॥ इति अपह्नुतिजाितः।

खरेषु विन्दुयुक्तेषु हलानां यदवोधनम् । तिद्वन्दुमदिति प्राहुः केचिद्विन्दुमतीमिति ॥ २९॥

बिन्दुः अनुसारो विद्यते यस्मिन् तत् बिन्दुमत्पृष्टम् ॥ मानसीनाभसीत्याद्या बुद्धादौ न्यासतो हि याः ।

बाहुल्येनाप्रयोगास्ता नेह तासां प्रदर्शनम् ॥ ३०॥ ठिठठठठूठाठठुं ठिट्टं ठिठोः दुदुठुठीठठिठः ।

ठठवुठठठि व्रुठठावुठठवुठीठठठोठठठुठः ॥

त्रिनयनचूडारतं मित्रं सिन्धोः कुमुद्रतीद्यितः ।

अयमुद्यति घुसःणारुणतरुणीवद्नोपमश्चन्द्रः ॥ ३१ ॥

किमुक्तं भवति । विन्दुमजातेः प्रथमं श्लोकं विधाय पद्याये श्लोकस्य वर्णाः भवन्ति ते छुप्यन्ते तेषां स्थाने ठकाराः विन्द्वो वा कियन्ते । तत्रस्थाः खरास्तत्रैव स्थाप्यन्ते । एवमेषा विन्दुमती भवति । परं हलानामभावात्र केनापि स श्लोको वाचियतुं शक्यते । अत्र त्रिनयनचूडारलमित्यस्य आर्थावृत्तस्य वर्णस्थाने ठकारा लिखिताः सन्ति । उपरिधाच खरा दत्ताः सन्ति । एतस्यैव श्लोकस्य रीखा विन्दुमती छेखनीया ॥

सिंख विधुमध्यगतं किं तव वदनमुत गण्डशेखरस्याङ्कः । एतौ विलोकनात्परस्परं विस्मयं क्रुकते दृइयते च ॥ ३२ ॥

वि विदुव्हरूकं विं क व्यव्हुव व्वेकेव्ह्रांवः । वेवै विवोव्यहुक्ट्रवं व्हितं दुव्वे व्ह्रवे व ॥ इति बिन्द्रमञ्जातिः ।

सिंख विधुमध्यगतं किमित्यार्थावृत्तस्य विन्दूत् लिखिला खरा देयाः ॥

क्रियादिकं स्थितं यत्र पद्संधातकौशलात् ।

स्फटं न लभ्यते तच क्रियागुप्तादिकं यथा ॥ ३३ ॥

किया इति कियापदं गुप्तं यस्मिन् तत् कियागुप्तं आदिर्यसिन् तत् कियागुप्ता-दिकम् । आदिशब्देन 'कियाकारकसंबन्धगुप्तान्यामित्रतस्य च गुप्तं । तथा समासस्य लिङ्गस्य वचनस्य च ॥' सुप्तिङ्कपस्य द्वयस्य वचनस्य च कारकशब्दे 'कर्ता कर्मं च करणं संप्रदानं तथैव । अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षद' ॥

राजन्नवघनस्यामनिर्धिशाकर्षदुर्जयः । आकल्पं वसुधामेतां विद्विषो द्य रणे बहुन् ॥ ३४॥ पुंस्कोकिल्कुल्स्येते नितान्तमधुरारवैः । सहकारद्वमा रम्या वसन्ते कामपि श्रियम् ॥ ३५ ॥

एतानि अष्ट पृष्टानां उदाहरणानि वक्ष्यन्तेऽनुक्रमेण-राजन्नवघनस्याम इस्त्रत्र अव, विद्विषो च रणे इस्त्रत्र च, नितान्तमधुरारवैरिस्त्र अधुः॥

इति कियागुप्तजातिः।

न करोति नाम रोषं न वदति पर्ह्मं न हन्त्ययं शत्रून्।
रश्जयति महीमखिलां तथापि धीरस्य वीरस्य ॥ ३६॥
शरिदन्दुकुन्द्धवलं नगपतिनिलयं मनोहरं देवम्।
यै: सुकृतं कृतमनिशं तेषामेव प्रसाद्यति ॥ ३७॥
अत्र धीरस्येति पदे धीः, मनोहरमिस्तत्र मनः, इति कर्तृपदं ग्रुप्तम्॥

इति कर्त्रगुप्तम्।

सीत्करासारसंवाद्दी सरोजवनमारुतः ।
प्रश्लोभयति पान्थस्त्रीनिःश्वासैरिव मांसलः ॥ ३८॥
सुभग तवाननपङ्कजदर्शनसंजातनिर्भरप्रीतेः ।
शमयति कुर्वन्दिवसः पुण्यवतः कस्य रमणीयः ॥ ३९॥
सरोजवनमारुत इसप्र सरः । शमयतीस्त्र शमिति कर्मपदं मिन्नत्वेन ॥

इति कर्मगुप्तम्।

पूतिपङ्कमयेऽत्यर्थं कासारे दुःखिता अमी । दुर्वारा मानसं हंसा गमिष्यन्ति घनागमे ॥ ४० ॥ अहं महानसा यातः कल्पितो नरकस्तव । मया मांसादिकं भुक्तं भीमं जानीहि मां बक ॥ ४१ ॥

दुष्टं वा जलं दुर्वाः तेन दुर्वारा कल्लामितजलेन । महच तत् अनः शकटं च महानः तेन महानसा ॥

> इति करणगुप्तम् । अम्भोरुह्मये स्नात्वा वापीपयसि कामिनी । ददाति भक्तिसंपन्ना पुष्पसौभाग्यकाम्यया ॥ ४२ ॥ प्रशस्त्रायुक्तमार्गस्य तव संमानितां श्रिताः । स्पृह्यन्ति न के नाम गुणरत्नालयप्रमो ॥ ४३ ॥

अम्मोरुहमये इत्यत्र अये । इः कामस्तसौ अये चतुर्थी । प्रशस्त्रायुक्तमार्गस्य-स्वत्र प्रशस्त्री कल्याणाय उक्तमार्गस्य ॥

> इति संप्रदानगुप्तम् । शिलीमुखैस्त्वया वीर दुवीरैर्निर्जितो रिपुः । विभेयसन्तमलिनो वनेऽपि कुसुमाकुले ॥ ४४ ॥

सरसीतोऽयमुद्धृत्य जनः कंदर्पकारकम् । पिवत्यम्भोजसुरभि स्वच्छमेकान्तशीतलम् ॥ ४५ ॥ अलिनो श्रमरात् । सरसीतः सरोवरात् ॥

इत्यपादानगुप्तम् । या कटाश्चच्छटापातैः पवित्रयति मानवम् । एकान्ते रोपितप्रीतिरस्ति सा कमलालया ॥ ४६ ॥

विपद्यमानता सिद्धा सर्वस्थैव निरूष्मणः।

यथात्र मसापद्भां च निर्वाणं हन्त्ययं जनः ॥ ४७ ॥ ए कृष्णे । कान्ते भर्तरि । एवं सप्तमी गुप्ता । विपद्यमानतेस्त्र विपदि कष्टे ॥

> इत्यधिकरणगुप्तम्। इति कारकगुप्तजातिः।

तूणेव मधुमासेऽस्मिन्सहकारद्वमश्वरी । इयमुन्निद्रमुकुछैर्माति न्यस्तशिलीमुखा ॥ ४८ ॥ प्राप्तमदो मधुमासः प्रवला रुक्पियतमोऽपि दूरस्थः । असतीसंनिहितेयं संहतशीलासखी नियतम् ॥ ४९ ॥

उनिद्रमुकुला एः इति भिन्ने पदे कियेते । इः कामस्तस्य एः पष्ट्येकवचनम् । अत्र मासः चन्द्रस्य ॥

संबन्धगुप्तम् । एका जातिः।

सर्वज्ञेन त्वया किंचिन्नास्यविज्ञातमीदृशम् । मिध्यावचस्तथा च त्वमसयं वेत्सि न कचित् ॥ ५०॥

कमले कमले निसं मधूनि पिवतस्तव।

मविष्यति न संदेहः कष्टं दोषाकरोदये ॥ ५१ ॥

सर्व जानातीति सर्वज्ञस्तस्य इनः स्वामी तत्संबोधनं हे सर्वज्ञेन हे पण्डितश्रेष्ठ, कमले कं अले इति पदच्छेदः । हे अले हे श्रमर ॥

इत्यामन्त्रितगुप्तम्। इयमप्येका जातिः।

विषादी मैक्ष्यमश्राति सदारोगं न मुश्वित । कृष्टेनापि त्वया वीरशंभुनारिः समः कृतः ॥ ५२ ॥

नित्यमाराधिता देवैः कंसस्य द्विषतस्ततुः।

मण्डलायं गदाशङ्कं चकं जयति विश्वती ।। ५३ ॥ विषं कालकूटं अति सः विषावी । दारैः सह वर्तमानः सदारः । उभयत्र द्विती

गादितत्पुरुषः समासः । नित्यमाराधिता देवैरित्यत्र नित्यमाः नित्यं मा लक्ष्मीर्यसां सा । बहुन्नीहिः ॥

इति समासगुप्तम्। इयमेका जातिः।

नितान्तस्वच्छहृद्यं सखी प्रेयान्समागतः । त्वां चिराइशेनप्रीत्या यः समालिङ्ग्य रंस्यते ॥ ५४ ॥ कलिकालमियं यावदगस्यस्य मुनेरिप । मानसं खण्डयस्त्र शशिखण्डानुकारिणी ॥ ५५ ॥

नितान्तखच्छहृद्यमिलत्र नितान्तमितशयेन खच्छं निर्मेठं हृत् हृद्यं यस सः नितान्तखच्छहृत् इति पुंलिङ्गनिर्देशः। कलिकालिमयमिलत्र इयं अगस्त्यस्य वृक्षस्य कलिका अर्छ अत्यन्तं मुनेः मनः खण्डयति। कलिका इति स्रीलिङ्गनिर्देशः॥

इति लिङ्गगुप्तम् । इयमप्येका जातिः। प्रमोदं जनयत्येव सदारा गृहमेधिनः। यदि धर्मश्च कामश्च भवेतां संगताविमौ ॥ ५६॥ सदारा इत्यत्र राः इति प्रथमैकवचनं सुबन्तम्। गृहमेधिन इति षष्ठी॥

सुब्वचनगुप्तम्। इयमेका जातिः।

कस्मात्त्वं दुर्वे हासीति सख्यस्तां परिपृच्छति । त्वयि संनिहिते तासु दद्यात्कथय सोत्तरम् ॥ ५७ ॥

अतिशयेन पृच्छन्तीति परिपृच्छित । इति यङ्छगन्ते अन्तिपरतो रूपमस्ति । इतियङ्छगन्ते अन्तिपरतो रूपमस्ति । इदमेव रूपमेकवचनं ज्ञायते न तु बहुवचनेन अतः तिङ्वचनगुप्तम् ॥

इति तिङ्वचनगुप्तम्।
इतिमप्येका जातिः।
अन्योऽप्यर्थः स्फुटो यत्र मात्रादिच्युतकेष्वपि।
प्रतीयते विदुस्तज्ज्ञास्तन्मात्राच्युतकादिकम्।। ५८॥
महाशयमतिस्वच्छं नीरं संतापशान्तये।
सल्वासादितशान्ताः समाश्रयत हे जनाः॥ ५९॥

यत्र प्रश्ने मात्राबिन्दुविसर्गाणां च्युतकेषु कृतेषु सत्सु द्वितीयोऽर्थः प्रकटो ज्ञायते तत् मात्रादिच्युतकादिकम् । च्युतकशब्देन कुत्रचित्स्थाने नाशः कुत्रचित् विनिमयः । 'सालटो पालटो' इति भाषा । मात्राच्युतकं आदिर्यस्मिन् तत् मात्राच्युतकादिकम् । स्थातव्यज्ञनयोश्वापि' इति । स्थानव्यज्ञनयोश्वापि' इति ।

एकस्मिन्नथें नीरं जलम् । द्वितीयेऽथें नीरशब्दस्य ईकारस्थाने अकारः कियते । तदा नरं इत्यवशिष्यते ॥

तुषारधवलः स्फूर्जन्महामणिधरोऽनघः।

नागराजो जयत्येकः पृथिवीधरणक्षमः ॥ ६० ॥

नागराजः शेषनागः एकसिन्नर्थे । द्वितीयेऽर्थे नागराज इसस्य आकारस्थाने अकारः क्रियते । तदा नगराज इति स्यात् । हिमाचळः ॥

इति मात्राच्युतकम्। इयमेका जातिः।

सुक्ष्यामा चन्दनवती कान्तातिलकभूषिता। कस्येषानङ्गभूः प्रीतिं सुजङ्गस्य करोति न ॥ ६१॥

एकस्मिन्नर्थे अनङ्गभूः कामस्य स्थानं ईदशी श्री । द्वितीयेऽथें अठेवारो छुप्यते तदा नगभूः पर्वतस्य मळ्याचळस्य भूमिः ॥

> यथा सत्प्रसवः स्निग्धः सन्मार्गविहितस्थितिः । तथा सर्वाश्रयः सत्यमयमेव कुळहुमः ॥ ६२ ॥

एकस्मिन्नश्रें अयं मे मम । बकुलहुमः अशोकवृक्षः । ववयोरैक्यम् । द्वितीयेऽथें अयमेव कुलहुम इत्यत्रायमित्यस्मादनुस्वारस्त्याच्यः तदायमेव कुलहुम इति स्थितम् । अयं पुमान् कुले हुम इव हुमो वृक्षः ॥

> इति बिन्दुच्युतकम्। इयमप्येका जातिः।

महीरुहो विङ्गानामेते हृद्यैः कलापिनाम् । विरुतैः स्वागतानीव नीरवाहाय कुर्वते ॥ ६३ ॥

एकसिमन्यें ह्यैः तृतीयाविभक्तिः । मनोहरैविंक्तैः शब्दैः । द्वितीयवारं ह्यैरि-स्यत्र विसर्गलोपे कृते ह्यैकलापिनां इति जातम् । ह्यं सुन्दरं एकं भद्वितीयं लपन्ति वदन्ति ते ह्यैकलापिनस्तेषां विङ्गानाम् ॥

> अगस्यस्य मुनेः शापाद्रह्मस्पन्दनमास्थितः । महासुः खात्परिश्रष्टो नहुषः सर्पतां गतः ॥ ६४ ॥

एकवारं महासः महान्तोऽसवः प्राणा यस्य सः । खात् आकाशात् । द्वितीय-वारं सुरित्यत्र विसर्गलोपे कृते महासुखात् महच तत्सुखं च तस्मात् राज्यात् ॥

> इति विसर्गच्युतकम्। इयमेका जातिः।

महानिप सुधीरोऽपि बहुरत्नयुतोऽपि सन् । विरसः ऋपरीवारो नदीनः केन सेन्यते ॥ ६५ ॥

नदीनां इनः खामी नदीनः समुद्र इत्येकस्मिन्नर्थे । द्वितीयेऽर्थे नदीन इत्यसात् नकारः सखरो छप्यते तदा दीन इति तिष्ठति । दीनशब्देन कृपणधनी पुमान् ॥

सुशीलः खर्णगौराङ्गः पूर्णचन्द्रनिभाननः ।

सुगतः कस्य न प्रीतिं तनोति हृदि संस्थितः ॥ ६६ ॥ एकसिन्नर्थे सुगतो बुद्धः जिनः । द्वितीयेऽर्थे सुगत इससात् गकारः सखरो लुप्यते । तदा सुत इति स्यात् । सुतः पुत्रः ॥

इति अक्षरच्यतकम्। इयमप्येका जातिः।

तनोतु ते यस्य फणी गरुत्मान् पाणौ मुरारिद्यिता च शय्या । नाभौ स्फुरन्भद्रमशुभ्रदेहः पद्मागतिश्चक्रमसौ विधाता ॥ ६७॥ हरः श्रयी तापकरः सुरेशः शान्तो हरिगीत्ररिपुर्विवस्तान् । चन्द्रो द्विजिह्वाश्रित इत्युपेक्ष्य लक्ष्म्या वृतः पातु विधिर्जगन्ति ६८ कर्तृकर्मिक्रयापदानि स्थानान्तरे धृतलात् अन्वयो दुर्लभो यस वृत्तस तद्वृतं स्थानच्युतकं कथ्यते । एवं सर्वत्रापि द्रष्टव्यम् । एवं येषां श्लोकानां मध्ये अर्थयो-जनिकायां कृतायां सत्यां योजनिका स्थानान्तरे धृतास्ति यो यस्य शब्दस्यान्वयत्वेन लगति स शब्दस्तत्पार्श्वे घृतो नास्ति । अत एव स्थानच्युतकम् ॥

इति स्थानच्युतकम्। इयमेका जातिः।

भिक्षवो रुचिराः सर्वे रसाः सर्वजनिरयाः। क्षमायामभिसंपन्ना दृइयन्ते मगवे परम् ॥ ६९ ॥

एकसिन्नर्थे भिक्षवः श्वेताम्बराः । द्वितीयेऽर्थे भिक्षव इति पदाद्गकारलोपः कियते तदा इक्षव इति गुडवृक्षाः ॥

सत्यशीलद्योपेतो दाता सुचिरमत्सरः। जिनः सर्वात्मना सेव्यः पद्मुचैरमीप्सता ॥ ७० ॥ एकसिन्नर्थे जिनो वीतरागः। द्वितीयेऽर्थे जिन एतसाजकारो छ्प्यते तदा इन इति स्थितम्॥

इति व्यञ्जनच्युतकम्। इयमेका जातिः।

स्फोटयित्वाक्षरं किंचित्पुनरन्यस दानतः । यत्रापरो भवेदर्थश्च्युतदत्ताक्षरं हि तत् ॥ ७१ ॥

च्युते नाशे सति तसिन्नेव स्थाने दत्तं अक्षरमन्यत् यसिस्तत् च्युतदत्ताक्षरं पृष्टम्॥

सदागतिह्तोच्छ्रायस्तमसो वद्यतां गतः। अस्तमेष्यति दीपोऽयं विधुरेकः शिवे स्थितः ॥ ७२ ॥ पूर्णचन्द्रमुखी रम्या कामिनी निर्मलाम्बरा। तनोति कस्य न स्वान्तमेकान्तमदनातुरम्।। ७३॥

एकसिम्मर्थे दीपः । द्वितीयेऽथे दीप इत्यत्र पकारं छुप्ला तत्स्थाने नकारो दीयते तदा दीन इति । अयं दीनो विध्यक्षन्द्रः एक एव शिवे स्थितः । एकसिम्मर्थे कामिनी स्त्री । द्वितीयेऽथें यामिनी रात्रिः ॥

इति च्युतद्त्ताक्षरजातिः । अम्बरमम्भसि पत्रमरातिः पीतमहीनगणस्य ददाह । यस्य वधूस्तनयं गृहमञ्जा पातु स वो हरलोचनवहिः ॥७४॥

इति स्थानच्युतकम्।
कृतिस्तु धर्मदासस्य सौगतस्य तपस्विनः।
विदग्धानां मुखाम्भोजप्रविकासकरी परा॥ ७५॥
इति चतुर्थः परिच्छेदः।

इति श्रीधर्मदाससूरिविरचितं विदग्धमुखमण्डनं काव्यं सटीकं समाप्तम्।

१ यस्य अम्भित गृहं जलशायित्वात् । यस्य अम्बरं वस्रं पीतं निसं पीताम्ब-रपरिधानात् । अहीनः सपराजस्तद्गणस्यारातिर्गेहडः यस्य पत्रं वाहनम् । यस्य च बधूः स्त्री अब्जा लक्ष्मीः । किंच यस्य तनयं कामं हरलोचनविहः ददाह स विष्णुः वः पातु । एवमस्य स्थानच्युतकस्य गतिः संपद्यते ।



अन्योजनी सीमानं विद्योक्त विने हिला ।

पुणपान्त्रपुर्वा स्था हार्याचा विश्वसम्बद्धा । समेरी पर्वा व स्वान्त्रप्रसम्बद्धानस्य ।

जिन, स्वास्ता संदा: व्यवस्थात्या ॥ ५०

संबक्षित्रवेशे वाता स्थितारवरा ।

HEBBERS SER TEPIEF

#### विकेयसंस्कृतपुस्तकानि।

~0:0:B-

### श्रीलोगाक्षिभास्करप्रणीतः अर्थसंग्रहः ।

श्रीमत्परमहंसरामेश्वरशिवयोगिभिक्षुप्रणीत-मीमांसार्थसंग्रहकौमुदीव्याख्यासहितः । मूब्यं १४ आणकाः, मार्गव्ययः २ आणको ।

# शासदीपिका।

सोमनाथप्रणीतमयूखमालिकाच्याख्यासंवलिता । प्रत्यधिकरणविभक्तजैमिनीयन्यायमालायुता अखाः प्रथमस्तर्कपादश्च रामकृष्णप्रणीत्वयुक्तिस्नेहपपूरणी— सिद्धान्तचन्द्रिकाच्याख्यायुतः खोपज्ञसिद्धान्तचन्द्रिकाग्र्ढार्थ-विवरणसहितश्च । भूढ्यं ८। क्र., गार्ग० १ क्र.

## मीमांसान्यायप्रकाशः।

(आपोदेवी)। मूर्व्य १० आणकाः, गार्भव्ययः २ आणको ।

## मीमांसाशास्त्रसारः।

निवीतान्तमीमांसासिद्धान्ततत्त्वार्धप्रकादाः । मूल्यं १ रूप्यकः, मार्गन्ययः ४

> पाणः निर्णयस